श्री विमर्श जागृति मंच भिण्ड (रजि.)

के अन्तर्गत

आचार्य विरागसागर ग्रन्थमाला

(रजत मुनिदीक्षा जयन्ती के पावन अवसर पर स्थापित)

उद्देश्य

मूल जिनागम का संरक्षण, प्रकाशन, प्रचार-प्रसार एवं
लोकोपयोगी, धार्मिक-नैतिक साहित्य का निर्माण व प्रकाशन

शुभाशीष/प्रेरणा

प.पू. श्रमणाचार्य विमर्शसागर जी महाराज

स्थापना ग्रन्थमाला : 09 दिसम्बर 2007

कार्यालय : 116, भूता कम्पाउण्ड, इटावा रोड़, भिण्ड (म.प्र.)

श्री विमर्श जागृति मंच, प्रकाशन

PRINTED BY : ARIHANT GRAPHICS 011-22002127/9958819046

समर्पण के स्वर

● श्रमणाचार्य विमर्शसागर

आचार्य विरागसागर ग्रंथमाला (हिन्दी ग्रन्थांक-12 (2)

समर्पण के स्वर

आचार्य विमर्शसागर

श्री विमर्श जागृति मंच, प्रकाशन

प्रथम संस्करण : 2005
द्वितीय संस्करण : 2013

आचार्य विरागसागर ग्रंथमाला : (हिन्दी ग्रन्थांक-12-2)

समर्पण के स्वर

श्रमणाचार्य विमर्शसागर

प्रकाशक :
श्री विमर्श जागृति मंच
116, भूता कम्पाउण्ड, इटावा रोड़, भिण्ड (म.प्र.) 477001

मुद्रक : अरिहंत ग्राॅफिक्स, दिल्ली
फोन : 011-22002127, 9958819046

© श्री विमर्श जागृति मंच (रजि.)

SAMARPAN KE SWAR

By : Sharmanacharya Vimarsh Sagar

Published by :
Shri Vimarsh Jagriti Manch
116, Bhuta Compound, Itawah Road, Bhind (M.P.)

वंदनीय आचार्य परम्परा

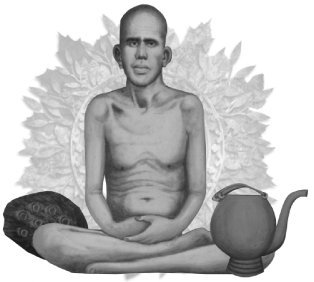

प्रथमाचार्य श्री 108 आदिसागर महाराज 'अंकलीकर'

आचार्य श्री 108 महावीर कीर्ति महाराज

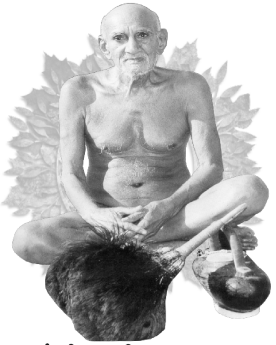

आचार्य श्री 108 विमल सागर महाराज

आचार्य श्री 108 सन्मतिसागर महाराज

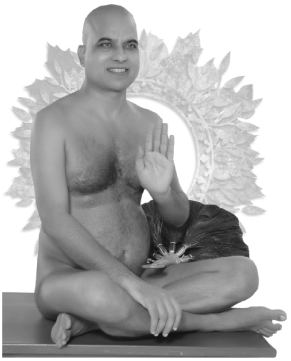

सूरिगच्छाचार्य श्री 108 विरागसागर महाराज

आचार्य श्री 108 विमर्शसागर महाराज

नमनकर्ता

श्री जगदीश कुमार गजेन्द्र कुमार जैन

(पारस ज्वैलर्स) बाबू गंज, एटा (उ.प्र.)

अनुक्रमणिका

आचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज (परिचय के आईने में) ..... (viii)
जीवन है पानी की बूँद ..... (xvi)
कर तू प्रभु का ध्यान ..... (xvii)
ऋण मुक्ति का वर दीजिये ..... (xix)
हे गुरूवर तुम मेरे संबल १
न उपकार भुला पाऊँगा २
हे विराग गुरू तुम्हें नमन हो! ३
हे चारित्र शिरोमणि गुरूवर ४
गुरू विराग तुम मेरे दर्पण। ५
आती है क्या याद हमारी ६
क्यों न गाऊँ गीत तुम्हारे ७
सच तू है मेरा हमराही। ८
दिखा दिया मुझको घर मेरा ९
पत्थर भी तुम पिघलाते हो १०
तुम ही रोज जगाते गुरूवर ११
ज्ञान सुधा तुम बरसाते हो १२
मैं हर बार तुम्हें चाहूँगा १३
तुम कषायें मोम सी पिघला रहे हो १४
देख जरा पाँवों के छाले १५
कर्मों की दीवार गिरा दो १६
कभी रूठ न जाना गुरूवर १७
तुम्हें पास ही पाता गुरूवर १८
जीवन को मंगलमय करते १९
हम श्रद्धा तुम हो श्रद्धेय २०
सब कुछ खोकर सब कुछ पाया २१
ऐसे न बहलाओ गुरूवर २२
मुझे मेरा वरदान मिल गया २३
मेरी प्रेम पुकार तुम्हीं हो २४
तुम मेरी काव्यांजलि हो २५
मुझको शिष्य बनाया होगा २६
सोच रहा वह कल कब आये २७
मैं विराग गुरू शिष्य तुम्हारा २८
जंजीरें ममता की सारी २९
अपना दर्श दिखाओ गुरूवर ३०

मिट्टी तपकर इठलाती है ३१
तुमने अपना फर्ज निभाया ३२
तुमसे प्रीति लगाई साईं ३३
साथी तुमसा आज मिल गया ३४
तुमने धीरज हमें बँधाया ३५
हम भँवरा तुम पुष्प विराग ३६
उभरी नयनों में छवि तेरी ३७
दर्पण तोड़े कई हजार ३८
याद तुम्हारी जब आती है ३९
जब-जब तेरा ध्यान लगाया ४०
सद् चरित्र की खान तुम्हीं हो ४१
गुरुवर हर भावना हमारी ४२
शब्द-शब्द में आओ गुरुवर ४३
हम पगतल की धूल तुम्हारे ४४
अपने पास बुलाना गुरुवर ४५
जब से छेड़ी संयम तान ४६
रखा जब-जब हाथ सिर पर ४७
सिर्फ तेरा प्यार पाऊँ ४८
मुझे न कोई गीत सुनाओ ४९
बहुत याद आते हो गुरुवर ५०
मत मेरा उपहार देखो ५१
दशलक्षण का सार तुम्हीं हो ५२
तुम मेरे शृंगार गुरुवर ५३
डाल पे बैठी कोयल गाती ५४
हे तप तीर्थ! तुम्हें शत वन्दन ५५
रिश्ता लगता युगों पुराना ५६
नाथ! हृदय में बसा लिया है ५७
मुरझाये गुल आप खिलाते ५८
दर्द भी लगता है प्यारा ५९
मुक्ति वधु से हो कुड़माई ६०
मैं तुलसी तेरे आँगन की ६१
दीवारें सब टूट जायेंगी ६२
मन को अब सतरंगी बातें ६३
कंचन जैसा तन पाया है ६४
हृदय सेज पर आओ स्वामी ६५
तुम सृजन की तूलिका हो ६६
गुरुवर तेरा हस्ताक्षर हूँ ६७

है विराग चेतन अनुरागी ६८
जब-जब तेरे गुण गाता हूँ ६९
प्रेरणा हो तुम हमारी ७०
किया नाथ! तेरा अभिवन्दन ७१
तुमने सच्ची प्रीति निभाई ७२
निर्निमेष हो देखी चितवन ७३
सँकरी राह बिछे हैं काँटे ७४
कश्ती ना इस पार डुबाओ ७५
गुरुवर हर अहसास तुम्हारा ७६
चरण चूमती है नित धरती ७७
सन्त निष्पृही कहलाते हो ७८
क्या एकाकी रह पाओगे? ७९
मेरे काव्य छन्द में आओ ८०
सहज मुक्ति पथ दर्शाते हो ८१
नहीं चाहिए मुझको ख्याति ८२
नाथ! मुझे निर्वाण चाहिए ८३
मुझको खुशियाँ मिल गईं रे ८४
फिर भी प्रेम दिया करते हो ८५
गुरुवर मेरी ओर निहारो ८६
तू ही सच्चा खेवन हारा ८७
कोरा कागज मेरा जीवन ८८
मेघा बनकर आओ स्वामी ८९
स्वीकारो हे नाथ! प्रणाम ९०
साँचा है गुरु प्यार तुम्हारा ९१
जीवन पुष्प हमारा खाली ९३
नाथ! आप सम पाऊँ सरलता ९४
कीर्ति स्तम्भ बने श्रमणों में ९५
नहीं राग से तेरे नाते ९६
गुरुवर तुम दर्पण को दर्पण ९७
गुरुवर मेरा मन दीवाना ९८
भोली सूरत लगती प्यारी ९९
गूँजेगा विराग जयकारा १००
निर्जरा का सार हो तुम १०१
मैं बहुत खुश हूँ हे गुरुवर! १०२

परिचय के आइने में

आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज

लौकिक यात्रा

पूर्व नाम	–	श्री राकेश कुमार जैन
पिता	–	श्री सनत कुमार जैन
माता	–	श्रीमती भगवती जैन
जन्म स्थान	–	जतारा, जिला टीकमगढ़ (म.प्र.)
जन्म तिथि	–	मार्गशीर्ष कृष्णा पंचमी सं. 2030
जन्म दिनांक	–	15 नवम्बर 1973, दिन – गुरुवार
शिक्षा	–	बी.एस.सी. (बायलॉजी)
भ्राता	–	दो (अग्रज राजेश जैन, अनुज चक्रेश जैन)
भगिनि	–	दो – कमला, प्रियंका
विवाह	–	बाल ब्रह्मचारी
खेल	–	बैडमिंटन, शतरंज (विशेषता – दोनों खेल जिनसे सीखें उन्हीं के साथ फाईनल खेलते हुए चैंपियन कप विजेता)
सामाजिक सेवा	–	मंत्री – श्री दिगम्बर जैन नवयुवक संघ, जतारा
रुचि	–	अध्ययन, संगीत, पेंटिंग
सांस्कृतिक रुचि	–	अनेक धार्मिक, सामाजिक नाट्य मंचन
करुणाभाव	–	बचपन में एक गरीब अंधे भिखारी को अक्सर पैसे दान देना।

परमार्थ यात्रा

आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज के प्रथम बार जतारा नगर में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं त्रयगजरथ महोत्सव में समाज की ओर से निवेदन के अवसर पर दर्शन हुये। आचार्यश्री की वात्सल्यता ने अत्यन्त प्रभावित किया। (सन्–1995, स्थान–मोराजी सागर, म.प्र.)

त्याग के संस्कार :

आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज की जतारा नगर की वैय्यावृत्ति के समय आजीवन आलू प्याज एवं रात्रि भोजन के त्याग से गृह त्याग की भावना।

ब्रह्मचर्य व्रत :

आचार्यश्री विरागसागरजी महाराज ससंघ का विहार कराते हुए सिद्धक्षेत्र श्री अहार जी में भगवान शान्तिनाथ की चरणछाया में फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी, सोमवार संवत् 2051, 27 फरवरी 1995 को आचार्यश्री से दो वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया।

सामायिक प्रतिमा :

आचार्यश्री विरागसागरजी महाराज से पार्श्वनाथ मोक्ष सप्तमी के अवसर पर सामायिक प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये। स्थान-ललितपुर क्षेत्रपाल जी, 3 अगस्त सन्-1995, गुरुवार।

ऐलक दीक्षा :

फाल्गुन शुक्ला पंचमी, शुक्रवार, संवत् 2052, 23 फरवरी 1996 को देवेन्द्रनगर (पन्ना) में तपकल्याणक के दिन आचार्यश्री विरागसागरजी महाराज से ऐलक दीक्षा ग्रहण की और नाम पाया ऐलक विमर्शसागर जी।

मुनि दीक्षा :

पौष कृष्णा 11, संवत् 2055, सोमवार दिनांक 14 दिसम्बर 1998 को अतिशय क्षेत्र बरासो (भिण्ड) में आचार्यश्री विरागसागरजी से मुनि दीक्षा ग्रहण की और मुनि विमर्शसागर नाम पाया।

आचार्य पद घोषित :

आचार्यश्री विरागसागरजी ने 2005 को कुन्थुगिरी पर गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर जी सहित 14 आचार्य एवं 200 पिच्छि के मध्य आचार्य पद घोषित किया।

आचार्य पद संस्कार :

मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी सं. 2067 रविवार दिनांक 12 दिसम्बर 2010 को बांसवाड़ा राजस्थान में आचार्य श्री विरागसागर जी ने आचार्य पद के संस्कार किये और नाम दिया आचार्य विमर्शसागर जी।

अलंकरण

रत्नत्रय के ऊर्जस्वी और तेजस्वी अलंकारों से जिनकी आत्मा का एक एक प्रदेश अलंकृत है। सत्यं-शिवं-सुंदरम् की दिव्य रश्मियों से आलोकित पूज्य

गुरूवर विमर्शसागर जी महाराज का विराट व्यक्तित्व किन्हीं शब्दालंकारों का मोहताज नहीं है फिर भी भक्तों की भक्ति के तीक्ष्ण प्रवाह को रोकना भगवान के भी बस की बात नहीं है, अत: जगह-जगह की धर्मप्राण-समाजों, ऊर्जस्वी संगठनों एवं यशस्वी व्यक्तियों ने नाना अवसरों पर अपने मनोभावों को शब्दों में समेट कर गुरूचरणों में कई शब्दालंकार प्रस्तुत किये हैं और अपना सौभाग्य माना है।

वात्सल्य शिरोमणि : संत के जीवन का सबसे प्रभावी गुण होता है उसका अकृत्रिम वात्सल्य भाव, पूज्य गुरूवर को यह वात्सल्य की अमूल्य सम्पदा, गुरू परम्परा से विरासत में ही प्राप्त हुई है, वर्षायोग 2008 के उपरान्त उ.प्र. के आगरा नगर में पंचकल्याणक के अवसर पर आगरा समाज ने आपके वात्सल्य से प्रभावित होकर आपको **''वात्सल्य शिरोमणि''** के अलंकार से विभूषित किया।

श्रमण गौरव : पूज्य गुरूवर विमर्शसागर जी महाराज की अनुशासन के सुडौल सांचे में ढली निर्दोष श्रमण चर्या वर्तमान में श्रमण जगत को गौरवान्वित करती है, पूज्य श्री की आगमानुसारी चर्या से प्रभावित होकर एटा-2009 वर्षायोग में शाकाहार परिषद द्वारा आपको **''श्रमण गौरव''** की उपाधि से अलंकृत किया और अपना सौभाग्य बढ़ाया।

वात्सल्य सिन्धु : वात्सल्य और करूणा के दो पावन तटों के बीच प्रवाहित गुरूवर की जीवन मंदाकिनी जनमानस की सतह पर बिखरी घृणा, बैर, कटुता की कलुषता को सहज ही धो डालती है। पूज्य श्री के इसी गुण आकर्षण से अनुग्रहीत हो, एटा में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन के अवसर पर राजेश जैन गीतकार आदि कवि समूह ने गुरूवर को **''वात्सल्य सिन्धु''** का भाव वंदन अर्पित कर सौभाग्य माना।

आचार्य पुंगव : संत, पंथ और ग्रंथवाद की वैचारिक संकीर्णताओं से 'असम्पृक्त' पूज्य श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज की सिर्फ चर्या ही अनुकरणीय नहीं, अपितु उनका 'चतुरानुयोग' का निर्मल ज्ञान भी ज्येष्ठ है। ऐसे ज्ञान और चर्या में श्रेष्ठ संत के महिमावंत व्यक्तित्व से प्रभावित होकर जतारा जैन समाज ने पंचकल्याण्का 2012 के अवसर पर आपको **''आचार्य पुंगव''** की उपाधि से भूषित कर अपना मान बढ़ाया।

राष्ट्रयोगी : पूज्य गुरूवर का ''वैचारिक वैभव'' सिर्फ जैनों तक सीमित नहीं अपितु हर जाति का व्यक्ति उसे अपनी विरासत मानता है। अत: विजयनगर वर्षायोग में राष्ट्रवादी संस्था भारत विकास परिषद् द्वारा आयोजित

दिव्य संस्कार प्रवचन माला में आपके राष्ट्रोन्नति से समृद्ध उपदेशों को सुनकर आपको **''राष्ट्रयोगी''** का अलंकार समर्पित किया।

सर्वोदयी संत : पूज्य आचार्यश्री की निर्भीक शैली जन मानस को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेती है तभी तो पूज्यवर के प्रवचनों में जैनों के साथ-साथ अजैन भी देशना को सुनकर आनंदित होते हैं, आपके उपदेशों में प्राणीमात्र के उदय की दिव्य चमक नजर आती है। तभी तो विजयनगर दिगम्बर जैन समाज ने 2012 वर्षायोग में आपको **''सर्वोदयी संत''** की उपाधि से नवाजा।

प्रज्ञामनीषी : श्रुताराधना के अनुपम आराधक-जिनेन्द्रवाणी के गहन प्रचारक, वाणी और कलम के अनूठे जादूगर पूज्य श्री की तीक्ष्ण प्रज्ञा और निर्मल ज्ञान से प्रभावित होकर, अखिल भारतीय आध्यात्मिक कवि सम्मेलन विजयनगर-2012 में कविगण एवं भारत विकास परिषद द्वारा आपको **''प्रज्ञामनीषी''** की उपाधि से भूषित कर मान बढ़ाया।

साहित्य यात्रा

आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज यूँ तो शरीर से दुबले-पतले लेकिन गौरवर्ण, शुभ संस्थान, चौड़ा ललाट, दमकता मुखमण्डल, प्रशस्त मुद्रा, मधुर मुस्कान के धारी हैं, ऐसे ही आचार्यश्री की लेखनी भी जनमानस के हृदय को छूने वाली है। आचार्यश्री ने अनेक विषयों पर कलम चलाते हुए साहित्य सृजन किया है।

काव्य, प्रवचन, पाठ संग्रह :

1. हे वन्दनीय गुरुवर (काव्य)
2. गूँगी चीख (प्रवचन)
3. शंका की एक रात (प्रवचन)
4. मानतुंग के मोती
5. विमर्शाञ्जलि (पूजा पाठ संग्रह)
6. गीताञ्जलि (भजन)
7. विरागाञ्जलि (श्रमण पाठ संग्रह)
8. जीवन है पानी की बूँद (भाग 1)
9. जीवन है पानी की बूँद (भाग 2)
10. जीवन है पानी की बूँद (समग्र)

11. जीवन चलती हुई घड़ी (काव्य)
12. खूबसूरत लाइनें (काव्य)
13. समर्पण के स्वर (काव्य)
14. आईना (काव्य)
15. सोचता हूँ कभी-कभी (काव्य)
16. मेरा प्रेम स्वीकार करो (काव्य)
17 वाह क्या खूब कही (काव्य)
18. कर लो गुरु गुणगान (काव्य)
19. आओ सीखें जिनस्तोत्र
20. जनवरी विमर्श
21. चटपटे प्रश्न-स्वादिष्ट उत्तर (पहेली)
22. जैन श्रावक और दीपावली पर्व
23. भरत जी घर में वैरागी
24. शब्द शब्द अमृत

गज़ल संग्रह

ज़ाहिद की ग़ज़लें

विधान :

आचार्य विरागसागर विधान
श्री भक्तामर विधान
श्री कल्याण मंदिर विधान
श्री श्रमण उपसर्ग निवारण विधान

चालीसा : गणधर चालीसा

टीका : योगसार प्राभृत (प्राकृत/हिन्दी)

लिपि : विमर्श लिपि, विमर्श अंक लिपि

पद्यानुवाद :

1. सुप्रभात स्तोत्र
2. महावीराष्टक स्तोत्र
3. लघु स्वयंभु स्तोत्र
4. भक्तामर स्तोत्र (त्रय पद्यानुवाद)
5. गोम्मटेस स्तुति
6. द्वात्रिंशतिका (सामायिक पाठ)

7. विषापहार स्तोत्र
8. एकीभाव स्तोत्र
9. पञ्चमहागुरुभक्ति
10. तीर्थंकर जिनस्तुति
11. गणधरवलय स्तोत्र
12. कल्याणमंदिर स्तोत्र
13. परमानंद स्तोत्र

बहुचर्चित भजन :

1. जीवन है पानी की बूँद
2. कर तू प्रभु का ध्यान
3. ऋण मुक्ति का वर दीजिये

प्रेरणा से प्रकाशन :

1. सिर्फ दो प्रवचन (आचार्य विरागसागरजी, सम्पादक-मुनि विमर्शसागर जी)
2. हिन्दी साहित्य की सन्त परम्परा में आचार्य विरागसागर के कृतित्व का अनुशीलन (डॉ. लोकेश खरे)
3. समसामयिक - आचार विद्वत् संगोष्ठी (कोटा)
4. पुरुषार्थ सिद्धियुपाय - राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (शिवपुरी)
5. प्रज्ञाशील महामनीषी

प्रेरणा से स्थापित :

आचार्य विरागसागर ग्रंथमाला

उद्देश्य : मूल जिनागम का संरक्षण प्रकाशन
प्रचार-प्रसार एवं लोकोपयोगी धार्मिक नैतिक साहित्य का निर्माण, प्रकाशन

विद्वत् संगोष्ठी :

1. समसामयिक - आचार विद्वत् संगोष्ठी (कोटा-2006)
2. पुरुषार्थ सिद्धयुपाय अनुशीलन राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (शिवपुरी-2007)

संस्कार यात्रा

ऐतिहासिक पूजन प्रशिक्षण शिविर : आचार्यश्री के सानिध्य एवं निर्देशन में आयोजित पूजन प्रशिक्षण शिविर एक ऐसी प्रयोगशाला है, जिसमें

जैनधर्म के संस्कार एवं शिक्षा का प्रयोग करना सिखाया जाता है। यदि चेतनतीर्थ स्वरूप उपासक संस्कारित नहीं, तो अचेतनतीर्थ स्वरूप जिनमंदिरों का महत्व नहीं जाना जा सकता। आचार्यश्री जब अपने मधुर कंठ से शिविर का यथायोग्य संचालन करते हैं तब हर श्रावक भक्ति में ऐसा लीन हो जाता है कि 4-5 घंटे का भी पता नहीं चलता। आचार्यश्री के निर्देशन में आयोजित इस शिविर के माध्यम से आज हजारों लोग जैनत्व के संस्कारों से जुड़े हैं। अभी तक 17 पूजन शिविर आयोजित हो चुके हैं :-

1. महरौनी (उ.प्र.)
2. वरायठा (म.प्र.)
3. अंकुर कॉलोनी, सागर (म.प्र.)
4. सतना (म.प्र.)
5. अशोकनगर (म.प्र.)
6. रामगंजमण्डी (राज.)
7. भानपुरा (म.प्र.)
8. सिंगोली (म.प्र.)
9. कोटा (राज.)
10. शिवपुरी (म.प्र.)
11. आगरा (उ.प्र.)
12. एटा (उ.प्र.)
13. डूंगरपुर (राज.)
14. अशोकनगर (म.प्र.)
15. विजयनगर (राज.)
16. भिण्ड (म.प्र.)
17. बड़ौत (उ.प्र.)

पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव :

1. नेमिनाथ पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव-2002 (रजवांस-सागर, म.प्र.)
2. आदिनाथ पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव-2003 (महरौनी, ललितपुर, उ.प्र.)
3. आदिनाथ पंचकल्याणक रथ महोत्सव-2004 (बूँदी-राज.)
4. आदिनाथ पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव-2007 (रामगंजमण्डी, राज.)
5. पार्श्वनाथ पंचकल्याणक रथोत्सव-2007 (कोटा (राज.)
6. आदिनाथ पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव-2008 (शिवपुरी, म.प्र.)
7. आदिनाथ पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव-2009 (आगरा, उ.प्र.)
8. आदिनाथ पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव-2010 (एटा, उ.प्र.)
9. आदिनाथ पंचकल्याणक त्रय गजरथ महोत्सव-2012 (जतारा, म.प्र.)
10 आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव-2013 (चंदेरी, म.प्र.)

चातुर्मास :

1. मढ़ियाजी जबलपुर - 1996
2. भिण्ड (म.प्र.) - 1997

3.	भिण्ड (म.प्र.)	–	1998
4.	भिण्ड (म.प्र.)	–	1999
5.	महरौनी (उ.प्र.)	–	2000
6.	अंकुर कॉलोनी (सागर)	–	2001
7.	सतना (म.प्र.)	–	2002
8.	अशोकनगर (म.प्र.)	–	2003
9.	रामगंजमण्डी (राज.)	–	2004
10.	सिंगोली (नीमच)	–	2005
11.	कोटा (राज.)	–	2006
12.	शिवपुरी (म.प्र.)	–	2007
13.	आगरा (उ.प्र.)	–	2008
14.	एटा (उ.प्र.)	–	2009
15.	डूंगरपुर (राज.)	–	2010
16.	अशोकनगर (म.प्र.)	–	2011
17.	विजयनगर (राज.)	–	2012
18.	भिण्ड (म.प्र.)	–	2013
19.	बड़ौत (उ.प्र.)	–	2014

वर्तमान संत संस्था में आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज एक ऐसे श्रेष्ठ संत हैं जिनके पास ज्ञान संस्कार की चर्या एवं चर्चा देखने-सुनने को मिलती हैं। कम-बोलना लेकिन काम का बोलना आचार्यश्री की अपनी विशिष्ट शैली है। प्रवचनों में सकारात्मक चिंतन को परोसने वाले हित-मित प्रियभाषी आचार्यश्री पंथ-संत-जातिवाद की भी खूब खबर लेते हैं। सच्चे संतत्व को प्रकाशित करने वाले **आचार्यश्री कहते हैं, पंथ-संत-जातिवाद को बढ़ावा देने वाले श्रमण एवं श्रावक जिनधर्म के विनाशक होंगे। आचार्यों की अपनी-अपनी आचार परम्परा से श्रावक साधुओं के प्रति अश्रद्धानी होंगे, साथ ही सामाजिक समरसता, एकता नष्ट होगी। सचमुच आचार्यश्री का चिन्तन भविष्य की व्याख्या कर रहा है।** आचार्यश्री का सरल-सौम्य व्यक्तित्व एवं पूर्वापर चिंतन ही आचार्यश्री की अलग पहिचान है। ऐसे युगचेता संत के चरणों में हम बारम्बार नमन करते हैं।

–श्रमण विचिन्त्यसागर
(संघस्थ)

जीवन है पानी की बूँद

(रचयिता-आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज)

जीवन है पानी की बूँद कब मिट जाए रे-ऽऽ
होनी-अनहोनी, हो-हो-२ कब क्या घट जाए रे-ऽऽ
साथ निभायेगा बेटा, सोच रहा लेटा-लेटा
हाय बुढ़ापा आएगा, पास न आएगा बेटा
ख्वाबों में तू क्यों, हो-हो-२ आनन्द मनाये रे-ऽऽ
अर्द्धमृतक समवृद्धापन, झुकी कमर सिकुड़न-सिकुड़न
गोदी में पोता-पोती, खोज रहा बचपन यौवन
बीते जीवन के, हो-हो-२ तू गीत सुनाये रे-ऽऽ
हाथों में लकड़ी थामी, चाल हो गई मस्तानी
यम के घर खुद जाने की, जैसे मन में हो ठानी
बेटा बहु सोचें, हो-हो-२ डोकरो कब मर जाये रे-ऽऽ
चारपाई पर लेटा है, पास न बेटी-बेटा है
चिल्लाता है पानी दो, कोई न पानी देता है
भूखा प्यासा ही, हो-हो-२ इक दिन मर जाये रे-ऽऽ
जीवन बीता अरहट में, पुण्य-पाप की करवट में
चढ़कर अर्थी पर जाये, अन्त समय भी मरघट में
तेरा ही बेटा, हो-हो-२ तेरा कफन सजाये रे-ऽऽ
सिर पर जिसे बिठाया है, गोदी में भी खिलाया है
लाड़ प्यार से पाला है, सुख की नींद सुलाया है
तेरा ही बेटा, हो-हो-२ तुझे आग लगाये रे-ऽऽ
जिसके लिए कमाता है, जीवन साथी बताता है
जिसकी चिन्ता कर करके, अपना चैन गँवाता है
देहरी से बाहर, हो-हो-२ वो साथ न जाये रे-ऽऽ
जीवन है पानी की बूँद कब मिट जाये रे-ऽऽ
होनी-अनहोनी, हो-हो-२ कब क्या घट जाये रे-ऽऽ

कर तू प्रभु का ध्यान

(रचयिता-आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज)

कर तू प्रभु का ध्यान-बाबा, कर तू प्रभु का ध्यान।
निज घट में भगवान-बाबा, निज घट में भगवान

काँटों में भी जीवन तेरा, फूलों सा खिल जाएगा
खोज रहा है जिसको तू वह, पल भर में मिल जायेगा
खुद को तू पहिचान-बाबा, खुद को तू पहिचान-१

धन-वैभव यह महल-खजाना, कुछ भी साथ न जाएगा
सुबह खिला जो फूल बाग में, साँझ समय मुरझायेगा
कर ले धर्मध्यान-बाबा, कर ले धर्मध्यान-२

कभी किसी का दिल दुःख जाये, ऐसे बोल कभी मत बोल
घावों पर मल्हम बन जाएँ, ऐसे बोल बड़े अनमोल
कहलाता यह ज्ञान-बाबा, कहलाता यह ज्ञान-३

माता-पिता, बड़ों का आदर, धर्ममार्ग पर चलो सदा
गुरूजन की नित सेवा करना, श्रावक का कर्त्तव्य कहा
पाओगे सम्मान-बाबा, पाओगे सम्मान-४

हिंसा, झूठ, कुशील, परिग्रह, चोरी यह मत पाप करो
पाप विनाशक, धर्म प्रकाशक, णमोकार का जाप करो
हो सम्यक् श्रद्धान-बाबा, हो सम्यक् श्रद्धान-५

राग-द्वेष भावों के कारण, भवसागर में डूब रहा
गँवा रहा भोगों में जीवन, मन फिर भी न ऊब रहा
क्यों बनता नादान-बाबा, क्यों बनता नादान-६

जिसको अपना कहा आज तक, हुआ कभी न वह अपना
जिसकी खातिर जिया आज तक, निकला वह सुंदर सपना
क्यों तू करे गुमान-बाबा, क्यों तू करे गुमान-७

मेंढक ने प्रभु ध्यान किया जब, मर कर देव हुआ तत्काल
समवसरण में प्रभु को ध्याया, जीवन उसका हुआ निहाल
मिट जाये अज्ञान-बाबा, मिट जाए अज्ञान-८

ऋण मुक्ति का वर दीजिये

रचयिता : श्रमणाचार्य विमर्शसागर

गुरुदेव मेरे आप बस इतनी कृपा कर दीजिए।
कल्याण अपना कर सकूँ, वरदान इतना दीजिए॥

सोचूं सदा अपना सुहित नहिं काम क्रोध विकार हो
हे नाथ ! गुरु आदेश का पालन सदा स्वीकार हो
सिर पर मेरे आशीष का शुभ हाथ प्रभु धर दीजिए। गुरुदेव.....

दृढ़ शील संयम व्रत धरूँ नित ब्रह्मचर्य लखूँ सदा
सीता सुदर्शन सम बनूँ निज आत्मसौख्य चखूँ सदा
माता सुता बहिना पिता दृष्टि विमल कर दीजिए। गुरुदेव.....

सच्चा समर्पण भाव हो नहिं स्वार्थ की दुर्गन्ध हो
विश्वासघात ना हम करें हर श्वांस में सौगंध हो
हे नाथ ! गुरु विश्वास की डोरी अमर कर दीजिए। गुरुदेव.....

जागे न मन में वासना मन में कषायैं न जगें
हो वात्सल्य हृदय सदा कर्त्तव्य से न कभी डिगें
गुरुभक्ति की सरिता बहे निर्मल हृदय कर दीजिए। गुरुदेव.....

भावों में निश्छलता रहे छल की रहे न भावना
गुरु पादमूल शरण मिले करते हैं हम नित कामना
जिनधर्म जिन आज्ञा सुगुरु सेवा का अवसर दीजिए। गुरुदेव.....

उपकार जो मुझ पर किये गुरुवर भुला न पायेंगे
जब तक है तन में श्वांस हम उपकार गुरु के गायेंगे
हम शिष्य हैं गुरु के ऋणी ऋणमुक्ति का वर दीजिए। गुरुदेव.....

सम्यक्त्व ज्ञान चरित्र से सुरभित रहे मम साधना
आचार की मर्यादा ही हे नाथ ! हो आराधना
स्वर-स्वर समाधिभाव का चिंतन मुखर कर दीजिए। गुरुदेव.....

वर्तमान में जातिवाद-पंथवाद में बँटती हुई जैन समाज का ध्यान आकर्षित करनेवाली और सम्यक् बोध प्रदान करनेवाली आचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज की **पंक्तियाँ**

तेरा और बीस पंथ, उलझे हैं श्रावक संत,
कोई तेरा कोई बीस करते बढ़ाई हैं।
करते हैं राग-द्वेष, जानें नहीं धर्म लेश,
मंदिरों में खींचतान करते लड़ाई हैं॥
कर रहे धर्म लोप, मानते हैं धर्म गोप,
एक दूसरे की अहंकार की चढ़ाई है।
तेरा-बीस के बयान, जैसे हिन्द-पाकिस्तान
हाय जैन एकता भी आज लड़खड़ाई है॥

कोई है बघेरवाल, कोई खण्डेलवाल,
कोई अग्रवाल तो कोई परवार है।
कोई-कोई जैसवाल, कोई-कोई ओसवाल,
कोई पोरवाल कोई गोल शृंगार है॥
बंद हुये बोलचाल, वाल की खड़ी दीवाल,
जातियों का भूत सबके ही सिर सवार है।
मंदिरों में अब जैन कहीं दिखते ही नहीं,
मंदिरों पे अब जातियों का अधिकार है॥

जातिमद चढ़ रहा, पन्थभेद बढ़ रहा,
जहाँ देखो वहाँ राग-द्वेष की ही बात है।
महावीर हुये खण्डेलवाल, अग्रवाल,
आदि-आदि मंदिरों पे लिखा ये दिखात है॥
कहीं महावीर हुये तेरा पंथी, बीस पंथी,
धर्मात्माओं ने भी दी क्या सौगात है।
सोचा जब मैं भी महावीर को पहचान दूँ,
तो धरा महावीर रूप, मेरी क्या औकात है॥

हे गुरुवर तुम मेरे संबल

तुझे याद करता हूँ पल-पल
जैसे सरिता बहती छल-छल
बिन तेरे कैसे रह पाऊँ
हे गुरुवर तुम मेरे संबल

आँखें तकती राह तुम्हारी
गुरुवर सूनी है मन क्यारी
हे प्रभु! आकर तुम्हीं खिला दो
सद्गुण की महके फुलवारी

सच कहता अब कुछ न चाहूँ
चाह रहा हूँ तेरा आँचल

मुझे अमावस की यह रातें
और पूर्णिमा की सौगातें
बिन तेरे सब सूनी लगतीं
सिर्फ सुहाती तेरी बातें

मेरे हृदय गगन में गुरुवर
विचरण करते हो तुम हरपल

गुरुवर तुमको पाया जबसे
बढ़कर हो दुनिया में सबसे
अँगुली का दो हमें सहारा
टेर दे रहा हूँ मैं कबसे

वह दिन कब आयेगा स्वामिन्!
चरण पखारें तेरे, अश्रुजल

12.09.2005
(सिंगोली)

न उपकार भुला पाऊँगा

गुरुवर तुम हो मेरी साँसें
कब अहसास दिला पाऊँगा
ओ मेरे जीवन के माली
न उपकार भुला पाऊँगा

आकर देखो हृदय तार पर
तेरे गीत तराने रहते
नींद हुई मेरी बंजारिन
तुझे याद कर अश्रु झरते

सदा महकता रहे चरण में
कब वह फूल खिला पाऊँगा

मोह – नींद में था मैं सोया
सपनों की दुनिया में खोया
तभी जगाया आकर तुमने
संयम जल से चेहरा धोया

बता दिया शुद्धात्मध्यान से
निज को निजरस पिला पाऊँगा

भवसागर का तट दिखलाया
मोक्ष महल का पथ बतलाया
किंतु तुम्हारे बिन हे गुरुवर!
मैं दो कदम नहीं चल पाया

मन में तुम्हें बसा, कागज पर
अपनी कलम चला पाऊँगा

12.09.2005
(सिंगोली)

हे विराग गुरु तुम्हें नमन हो!

हे अमूर्त शिल्पी ! वन्दन हो
हे विराग गुरू! तुम्हें नमन हो

मिट्टी को भी गढ़ने वाले
अन्तस् मन को पढ़ने वाले
चर्या से शिवमार्ग बताते
मुक्तिपथ पर बढ़ने वाले

चरण धूल जैसे चन्दन हो।

राग रंग से दूर हुए हो
वीतराग भरपूर हुए हो
गुण-स्थानों के झूले में
झूल अमूर्त स्वभाव छुये हो

स्वामिन! सिरसा अभिनंदन हो।

ज्ञायक को ज्ञायक हो जाना
मैं ज्ञायक हूँ ऐसा माना
जिनशासन की शान हे गुरुवर
हुआ नहीं संकल्प पुराना

मिटा रहे सब आक्रन्दन हो।

शुद्ध निरंजन निर्विकार हूँ
न परद्रव्यों का विकार हूँ
सबसे भिन्न, पूर्ण अपने में
मैं तो चेतन चमत्कार हूँ

करते नित यह स्पन्दन हो।

13.09.2005
(सिंगोली)

हे चारित्र शिरोमणि गुरुवर

हे चारित्र शिरोमणि गुरूवर!
एक तुम्हीं हो मेरे प्रभुवर

ओ वाणी के चतुर चितेरे
रहते हो तुम दिल में मेरे
बनकर तुम्हीं दीप ज्योतिर्मय
मिटा रहे हे नाथ! अँधेरे

नहीं दिखाई देता तुमसा
छाँव भरा अब कोई तरूवर

नया नहीं अनुराग हमारा
भव-भव में बस तुम्हें पुकारा
मल्हम लगा घाव सहलाते
है अगणित उपकार तुम्हारा

प्रेम नीर बरसाने वाले
अब न खोजूँ कोई सरोवर

तुम हो मेरे चंदा-सूरज
मैं कीचड़ हूँ तुम हो नीरज
तुम आकर मुझ में खिलते हो
सोच-सोचकर धरता धीरज

आओ मेरे पास तो आओ
बुला रहे मेरे अन्तर स्वर

13.09.2005
(सिंगोली)

गुरु विराग तुम मेरे दर्पण।

यह क्या, हर जीवन है अर्पण
गुरु विराग तुम मेरे दर्पण

मैं अबोध अदना सा बालक
मिला भाग्य से तुमसा पालक
हाथ पकड़कर हमें चलाया
तुमने हमें बनाया लायक

साँसों का संगीत सुहाना
करता तुमको नाथ! समर्पण

तेरे चिन्तन की गहराई
चर्या में आकर लहराई
छोड़ दिया है सबको, फिर भी
मुक्ति वधु की चाह समाई

निज शुद्धात्म ध्यान में रहकर
बिता रहे हो अपना क्षण-क्षण

तप में खुद को खूब तपाया
हुई सहज ही कंचन काया
ज्ञान-ध्यान की माया जोड़ी
भेद रहा न अपना-पराया

तुम्हें पुकार रहे हे स्वामिन्!
धरती अम्बर के हर कण-कण

13.09.2005
(सिंगोली)

आती है क्या याद हमारी

आती है क्या, याद हमारी
जब करता हूँ बात तुम्हारी

पूछ रहा हूँ गुरुवर तुमसे
भूल क्षमा करना हो हमसे
मैं श्रद्धा-भक्ति में डूबा
चाह रहा हूँ उतार कब से

तुम्हें याद आये न आये
मैंने आरति तेरी उतारी

बसी हृदय में तेरी मूरत
तुम्हें पुकारूँ बिना मुहूरत
रोम-रोम पुलकित होता है
साफ नज़र आती है सूरत

होंठों पर मेरी मुरली क्या
कभी बजाई कृष्ण मुरारी

जब से तेरा दरश मिला है
गुरुवर तेरा परस मिला है
पलभर भी न दूर हुये तुम
यह मेरा सौभाग्य खिला है

वीतराग पथ दिखलाया है
तुमने हे रत्नत्रय धारी

13.09.2005
(सिंगोली)

क्यों न गाऊँ गीत तुम्हारे

क्यों न गाऊँ गीत तुम्हारे
जब तुम ही हो मीत हमारे

जिसने गुरु का मान न जाना
गुरुवर को भगवान न जाना
उसने अपने स्वाभिमान का
सच कहता सम्मान न जाना

पाऊँगा मैं अपनी मंजिल
गुरु-शिष्य की प्रीति सहारे

गिरे हुये को आप उठाते
भूले को सद्मार्ग दिखाते
साधर्मी गर मिल जाये तो
उसको अपने गले लगाते

आगम पथ के ओ हमराही
साँसों का संगीत पुकारे

सरिता से सागर तक तुम हो
धरती से अम्बर तक तुम हो
कहती दिल की मधुर रागिनी
गुरु से तीर्थंकर तक तुम हो

श्रद्धा पुष्प खिलाया जिसने
उसको सच्ची जीत पुकारे

13.09.2005
(सिंगोली)

सच तू है मेरा हमराही।

मुझे साथ ले चलना राही
सच तू है मेरा हमराही

सेवक हैं गुरूवर हम तेरे
वरदहस्त हो सिरपर मेरे
ना चिंता फिर तूफानों की
चाहे फिर वो कितना घेरे

सच कहता हूँ फिर कर्मों की
मिट जायेगी काली स्याही

गौतम को महावीर ने तारा
हनुमत को रघुवीर ने तारा
हे विराग गुरू! विमर्शसागर
गौतम जैसा शिष्य तुम्हारा

रही भावना युगों-युगों से
मुक्तिरमा ही हमने चाही

दीपक बनकर जला आज तक
और पुष्प बन खिला आज तक
रहा न कोई शत्रु जगत में
प्यार सभी का मिला आज तक

किन्तु मिली न मुझको मंजिल
दिल में मेरे वही समाई

14.09.2005
(सिंगोली)

दिखा दिया मुझको घर मेरा

जला दिया सब रैन बसेरा
दिखा दिया मुझको घर मेरा

तोड़ी अब तक कितनी प्याली
भरी हुई थी कर दी खाली
भँवरा बनकर कितना घूमा
फूल-फूल हर डाली-डाली

रात कामिनी संग बीती है
फूलों संग जब हुआ सबेरा

मुझको चाहत के सपनों ने
लूटा है मुझको अपनों ने
आज दिखा है मुझको साथी
सच्चा प्रेम तेरे नयनों में

हे गुरूवर! हर राग-रंग से
हुआ दूर अब बनकर तेरा

लगी लगन अब मेरी मुझमें
कल तक जो देखी थी तुझमें
निज ज्ञायक प्रभु के अनुभव से
प्रेम दीप अब लगा है बुझने

पहुँच चुका हूँ लक्ष्यधाम तक
पूर्ण हुआ संकल्प ये तेरा

14.09.2005
(सिंगोली)

पत्थर भी तुम पिघलाते हो

पत्थर भी तुम पिघलाते हो
चमत्कार क्या दिखलाते हो

मन्द-मन्द मुस्कान तुम्हारी
चेहरे पे लगती है प्यारी
तेरी स्नेहिल नजरों में
मिल जाती हर पुलक हमारी

घाव पुराने सदियों के भी
सहज भाव से सहलाते हो

वात्सल्य का भाव निराला
दुखिया का दुःख हरने – वाला
पाता है जो भी हे स्वामिन्!
होता है वह किस्मतवाला

इसीलिए लगता है गुरूवर
कृपासिंधु तुम कहलाते हो

ईर्यापथ से चलने – वाले
और प्रमाद को दलने – वाले
वीतरागता देख तुम्हारी
नतमस्तक हों जलने – वाले

मूल – गुणों का पालन करके
अपने मन को बहलाते हो

14.09.2005
(सिंगोली)

तुम ही रोज जगाते गुरुवर

सपनों में नित आते गुरुवर
तुम ही रोज जगाते गुरुवर

दूर बहुत हो, किन्तु पास हो
आती-जाती हुई स्वाँस हो
इसीलिए तो मेरे गुरुवर
तुम ही मेरे लिए खास हो

यह अहसास दिलाते गुरुवर!

मैं हूँ बहती नदी की धारा
तुम हो सागर लक्ष्य हमारा
शिक्षा-दीक्षा देकर तुमने
मेरा नाथ! भविष्य सँवारा

लोरी रोज सुनाते गुरुवर!

कल जब तुम सपनों में आये
हमने तुमको भजन सुनाये
पाया जब आशीष तुम्हारा
रोम-रोम मेरे हर्षाये

अपने पास बुलाते गुरुवर!

मेरे मन को निर्मल करते
राग द्वेष का तुम मल हरते
वीतरागता का पथ देकर
मानुष जीवन मंगल करते

निद्रा – योग सुलाते गुरुवर!

14.09.2005
(सिंगोली)

ज्ञान सुधा तुम बरसाते हो

ज्ञान सुधा तुम बरसाते हो
हर जन-मन को हर्षाते हो

देह सीप में करती केली
कर्म-त्रास आत्मा अकेली
भेदज्ञान से जिसने जाना
बदल गई जब जीवन-शैली

अपने अनुभव उपदेशों से
जीवन बगिया महकाते हो

आतम ज्ञानानन्द - स्वभावी
परभावों से सदा अभावी
शुद्ध ज्ञान-दर्शन जब प्रगटे
रहे न मिथ्याभाव प्रभावी

शुद्ध-बुद्ध ज्ञायक स्वभाव की
महिमा सबको बतलाते हो

हूँ अमूर्त अविकार निरंजन
शुद्ध - चेतना करती गुंजन
सहज - स्वभाव आश्रय करके
मिटा दिया जिसने कर्मांजन

अपनी चर्या से हे गुरुवर!
मोक्षमार्ग तुम दर्शाते हो।

14.09.2005
(सिंगोली)

मैं हर बार तुम्हें चाहूँगा

मैं हर बार तुम्हें चाहूँगा
जब तक मुक्ति नहीं पाऊँगा

भोर हुई जब सूरज आया
धरती पर प्रकाश फैलाया
पंछी-पंछी लगा चहकने
सबने मिलकर मोद मनाया

सूरज संग पंछी खुश इतने
कैसे तुम्हें भुला पाऊँगा

पढ़ना और पढ़ाना मुझको
बढ़ना और बढ़ाना मुझको
पंचाचार प्रवीण है गुरुवर
हँसना और हँसाना मुझको

मधुर प्रेम की डाँट लगाना
मैं दुनिया को बतलाऊँगा

तेरी प्यारी-प्यारी बातें
ज्ञान-ध्यान तप की सौगातें
अनुभव आप सिखाते रहते
चाहे दिन हो चाहे रातें

गुरु शिष्य का महामिलन यह
सदियों-सदियों तक गाऊँगा

14.09.2005
(सिंगोली)

तुम कषायें मोम सी पिघला रहे हो

तुम कषायें मोम सी पिघला रहे हो
आत्म ज्योति को निरंतर जला रहे हो

है सुमेरू सा अटल संकल्प तेरा
मुक्ति मंजिल पाना एक विकल्प तेरा
सामने बाधायें चाहे आयें कितनी
क्षीणता को प्राप्त अन्तर्जल्प तेरा

निरखकर पग धर रहे महावीर जैसे
चित्त को चारित्र से बहला रहे हो

आज मानवता हुई साकार तुझमें
दिख रहा अरिहन्त का आकार तुझमें
दर्प खंडित हो गया छवि देख तेरी
सच कहूँ सार्थक हुआ नवकार तुझमें

किस विधि पूजा करूँ गुरूदेव तेरी
आचरण को आचरण सिखला रहे हो

नाज है गुरूदेव तेरा शिष्य बनकर
चलता हूँ ईर्यासमिति से भी मैं तनकर
कर लिया संकल्प अब हमने भी गुरूवर
आठ कर्मों को रहूँगा मैं भी हनकर

कर्म छलिया अब मुझे न छल सकेगा
मोक्ष की जब राह तुम दिखला रहे हो

15.09.2005
(सिंगोली)

देख जरा पाँवों के छाले

ओ कर्मों से लड़ने-वाले
देख जरा पाँवों के छाले

माना तुझको नेह नहीं है
तन से भी स्नेह नहीं है
चलना लक्ष्य बनाया तुमने
क्योंकि तुम्हारा गेह नहीं है

किंतु हमें स्नेह आपसे
ओ शिवपथ पर बढ़ने-वाले

कल तुमने उपवास किया था
श्वाँस-श्वाँस निजवास किया था
तन की ज्योति मंद हुई थी
चेतन ज्योति प्रकाश किया था

सिद्ध प्रभु सी अपनी किस्मत
अपने हाथों गढ़ने-वाले

वीतराग छवि ओ मृदुभाषी
मेरी अँखियाँ रहती प्यासी
विमल गुरु ने शायद की है
रत्नत्रय से यह नक्कासी

ओ चेतन के शुद्धगगन में
पंछी बनकर उड़ने-वाले

16.09.2005
(सिंगोली)

कर्मों की दीवार गिरा दो

मेरा मुझसे मिलन करा दो
कर्मों की दीवार गिरा दो

मुझको गहरी प्यास लगी है
श्वाँस-श्वाँस में खास जगी है
देखी जब तुम जैसी बदली
गुरुवर हमको आश लगी है

जान रहा मैं खुद हूँ सागर
एक बार इसको लहरा दो

है अनन्तबल फिर भी निर्बल
हूँ अशुद्ध होकर के निर्मल
और न दिखता कोई साथी
एक तुम्हीं हो मेरे संबल

हूँ स्वाधीन सदा से लेकिन
पर्याय में परचम फहरा दो

मैं अखंड ज्ञायक-स्वरूप हूँ
अरस, अगंध, अस्पर्श, अरूप हूँ
किंतु विभाव परिणमन करके
मैं पर्यायों में कुरूप हूँ

निज स्वभाव में स्थित हूँ पर
एक बार निज में ठहरा दो

16.09.2005
(सिंगोली)

कभी रूठ न जाना गुरुवर

कभी रूठ न जाना गुरुवर
शिशुवत् साथ निभाना गुरुवर

तुम ही मात-पिता हो मेरे
तुम ही बंधु-सखा हो मेरे
तुम बिन न पलभर जी पाऊँ
तुम ही गुरु खुदा हो मेरे

पथ पर चलते थक जाऊँ तो
अपनी गोद सुलाना गुरुवर

गुरुवर हम हैं शिष्य अकिंचन
हृदय बिठा करता अभिसिंचन
भाव पुष्प की अंजलि भरकर
करता नित चरणों की अर्चन

मेरे मन मन्दिर में आकर
दीपावली मनाना गुरुवर

श्रद्धा सेज सजाई हमने
शम्मा एक जलाई हमने
आओ बैठो पास हमारे
कविता एक बनाई हमने

कभी भूल हो मुझसे कोई
मुझको न ठुकराना गुरुवर

16.09.2005
(सिंगोली)

तुम्हें पास ही पाता गुरुवर

जब भी ध्यान लगाता गुरुवर
तुम्हें पास ही पाता गुरुवर

जो पथ तुमने अपनाया है
उस पर चलना सिखलाया है
जो चाहा था तुमने मुझसे
हमने करके दिखलाया है

मैं अपना उत्साह बढ़ाने
गीत तुम्हारे गाता गुरुवर

सारी दुनिया साथ हमारे
पुण्य-पाप ने डोरे डारे
कोई नहीं किसी का साथी
याद आये उपदेश तुम्हारे

पुण्य-पाप की यह सच्चाई
हर राही को बतलाता गुरुवर

रोज तुम्हीं से बातें करता
अपने मन की पीड़ा हरता
दर्द दूर रहने का तुमसे
इसीलिए आने से डरता

श्रद्धा है अनमोल हमारी
जिससे मन उमगाता गुरुवर

17.09.2005
(सिंगोली)

जीवन को मंगलमय करते

मन को तुम ज्योतिर्मय करते
जीवन को मंगलमय करते

तुम शिल्पी हम अनगढ़ पत्थर
बना दिया प्रतिमा सा गढ़कर
तुझे सराहा करते दर्शक
वीतराग छवि मेरी पढ़कर

तुम हो वह पारस हे गुरूवर!
जो लोहा पारसमय करते

मिटा दिया मन का अँधियारा
फैला ज्ञान – ज्योति उजियारा
क्या लौटा पाऊँगा गुरूवर
भव-भव में उपकार तुम्हारा

मृण्मय से तुम दृष्टि हटाकर
निज स्वभाव से तन्मय करते

भाल तुम्हारा है तेजस्वी
वाणी है तेरी ओजस्वी
धरती अम्बर यश गाते हैं
हे विराग गुरूदेव यशस्वी

जो भवि तेरी महिमा गाते
अपने को ही गुणमय करते

17.09.2005
(सिंगोली)

हम श्रद्धा तुम हो श्रद्धेय

हम श्रद्धा तुम हो श्रद्धेय
अमर रहेगा अभिनव प्रेय

गौतम ने महावीर को माना
हनुमत ने रघुवीर को माना
उसी तरह मुनिवर विमर्श ने
गुरू विराग तुमको पहिचाना

किस्मत भी न बदल सकेगी
गुरूवर मेरी भक्ति अजेय

सीख लिया काँटों पर चलना
सीख लिया दीपक सा जलना
सीख लिया हमने तितली सा
फूल-फूल के लिए मचलना

मिलता जिससे प्यार सभी का
प्रगटाया अंग-अंग विनेय

श्वाँस-श्वाँस में बसा लिया है
धड़कन-धड़कन तुम्हें जिया है
नाथ! मुझे न क्षणभर फुर्सत
नाम मंत्र का जाप किया है

गीत तुम्हारे ही गाता हूँ
शिवपथ दाता मेरे श्रेय

17.09.2005
(सिंगोली)

सब कुछ खोकर सब कुछ पाया

सब कुछ खोकर सब कुछ पाया
हे गुरूवर! सौभाग्य ये आया

जीवन जीने की मिली कला है
अशुभ भाव की मिटी बला है
उपकारी, हितकारी गुरूवर
मुझे तेरा आशीष फला है

तुम जैसी समता पाने ही
तुमको अपने हृदय बुलाया

दर-दर हमने ठोकर खाई
सुख न किंचित् दिया दिखाई
किंतु लिये आशायें अगणित
अपने मन को सैर कराई

प्रज्ञा का तब हुआ जागरण
जब तुमने आ हमें जगाया

जितना पाया उतना रोया
हाय-हाय में जीवन खोया
तृष्णा के फंदे में फँसकर
बीज पाप का फिर से बोया

देकर सद-उपदेश आपने
सच्चे सुख का मार्ग दिखाया

17.09.2005
(सिंगोली)

ऐसे न बहलाओ गुरुवर

ऐसे न बहलाओ गुरुवर
पास हमारे आओ गुरुवर

बहती हुई नदी हूँ लेकिन
तुमको पाने मैं ठहरा हूँ
मुझमें आकर डूबो देखो
सागर से भी मैं गहरा हूँ

रत्नत्रय के रत्न निकालो
मेरा मान बढ़ाओ गुरुवर

चाह रहा हूँ तुझसी आँखें
पंछी जैसी चाहूँ पाँखें
अपनी मंजिल न पहिचानी
करी अनेकों देहें राखें

उड़ जाऊँ आकाश नापने
अपने हाथ उड़ाओ गुरुवर

जब से अपनी शक्ति जानी
दुनियाँ मुझको लगी वीरानी
छोड़ दिये सब संगी-साथी
दुनियाँ मेरी हुई दीवानी

संयोगों की हर सच्चाई
दुनियाँ को समझाओ गुरुवर

18.09.2005
(सिंगोली)

मुझे मेरा वरदान मिल गया

मुझे मेरा वरदान मिल गया
गुरु तुमसा भगवान मिल गया

अब तक देखे लाखों पनघट
हर पनघट पर देखा जमघट
किन्तु मिली न शान्ति जरा भी
रहा बदलता हरदम करवट

देखा जब से तुमसा पनघट
मुझको शान्ति निधान मिल गया

मुझे रास न आयें सितारे
चंदा-सूरज न ध्रुव तारे
मेरे चितचोर तुम गुरुवर
अपलक नयना तुझे निहारे

हृदय सँजोये जितने सपने
उन सबको सम्मान मिल गया

सच कहता अब कुछ न चाहूँ
जब चाहूँ बस तुमको चाहूँ
निज आतम का ध्यान लगाकर
खुद में परमातम प्रगटाऊँ

नीरव नीलगगन को जैसे
पंछी का सहगान मिल गया

18.09.2005
(सिंगोली)

मेरी प्रेम पुकार तुम्हीं हो

जीवन की झंकार तुम्हीं हो
मेरी प्रेम पुकार तुम्हीं हो

जब सुगंध के साथ पवन हो
सुरभित सारा नीलगगन हो
परस आपका जो भी पाता
सुरभित उसका अन्तरमन हो

शिवपथ पर हर खिलने वाली
कलियों का शृंगार तुम्हीं हो

मेरे गीतों की हर सरगम
तेरे संग बहती है हरदम
गुरुवर तेरे क्षणिक मिलन में
जीवन की खुशियाँ लगती कम

मेरी अन्तर श्रद्धा कहती
महामंत्र नवकार तुम्हीं हो

काँटों में तुम फूल खिलाते
विष को अमृत तुल्य बनाते
भक्तों का मन माँज-माँजकर
चेतन मूरत को प्रगटाते

पुण्ययोग कृत महायोग की
घड़ियों का उपहार तुम्हीं हो

19.09.2005
(सिंगोली)

तुम मेरी काव्यांजलि हो

समर्पित विनयांजलि हो
तुम मेरी काव्यांजलि हो

विसर्जित सब वासनायें
और मन की त्रासनायें
हर हृदय से उठ रही हैं
श्री चरण में प्रार्थनायें

गीत व उसकी ऋचायें
कह रहीं मन प्रांजलि हो

अब हुई प्रज्ञा सयानी
साधना की वो दीवानी
राह इक हम दोनों राही
चाह मुक्ति की पुरानी

चल रहा पद-चिह्न पर मैं
पूर्ण मम भावांजलि हो

आपका गुरूवर इशारा
हर कदम पे है सहारा
लहर आकर कह रहीं हैं
साथ आओ दूँ किनारा

लहर बन आशीष तेरा
सिंधु को पुष्पांजलि हो

19.09.2005
(सिंगोली)

मुझको शिष्य बनाया होगा

मुझको शिष्य बनाया होगा
कुछ विचार तो आया होगा

मेरी दृढ़ता देखी होगी
मेरी समता लेखी होगी
मेरे भावों की उत्कटता
मेरे अंदर देखी होगी

सहज भाव शिवपथ के मुझमें
देख हृदय हर्षाया होगा

निज स्वभाव में अभय समाया
भवभीरू-पन् सहज ही आया
वीतराग अनुभव में प्रगटा
राग त्याग परिणति में आया

मेरी अन्तर दशा जानकर
वात्सल्य वर्षाया होगा

मेरी श्रद्धा, भक्ति, समर्पण
साम्य भाव चर्या में क्षण-क्षण
एकाकीपन और मुमुक्षा
जिनशासन, गुरु के प्रति अर्पण

देख सहज ही शुभाशीष का
अपना हाथ उठाया होगा

19.09.2005
(सिंगोली)

सोच रहा वह कल कब आये

सोच रहा वह कल कब आये
पुनः मिलन का क्षण जब आये

कितने अरसे बीत गये हैं
आयु के घट रीत गये हैं
कितनों ने मुख मोड़ लिया है
हम तो फिर भी जीत गये हैं

आश लगी तुझसे मिलने की
धुंध विरह का छँट कब जाये

तुम कोमल अहसास हमारे
रहते हो नित पास हमारे
हे श्रद्धेय! तुम्हारी यादें
जैसे श्वास-उच्छ्वास हमारे

मन से निकट दूर हूँ तन से
यह दूरी प्रभु! मिट कब जाये

जब कोई भजन सुनाता होगा
कह 'गुरूदेव' बुलाता होगा
तब शायद मेरा धुँधला सा
चेहरा याद तो आता होगा

हे महासन्त! तुम हो बसन्त
मैं कोयल हूँ, पा मन हर्षाये

20.09.2005
(सिंगोली)

मैं विराग गुरु शिष्य तुम्हारा

मैं विराग गुरू शिष्य तुम्हारा
सोते-जगते तुम्हें पुकारा

फूल बिछुड़ सकता डाली से
दूध बिखर सकता प्याली से
आकर रोज जगाने – वाला
सूर्य बिछुड़ सकता लाली से

नाथ! चेतना की वेदी पर
हमने प्रभु सा तुम्हें निहारा

मन्द-मन्द मुस्कान तुम्हारी
वीतराग आभा अति प्यारी
सदा सरलता और सौम्यता
सब सन्तों से करती न्यारी

समा गई सागर में जैसे
सरिता की बहती जलधारा

कभी असाता संकट लाता
नाम जपूँ तो वह कट जाता
दुःख हो चाहे कितना गहरा
धुन्ध दर्द का भी छँट जाता

महावीर सा गुरू मिल गया
मिल जायेगा मुझे किनारा

20.09.2005
(सिंगोली)

जंजीरें ममता की सारी

जंजीरें ममता की सारी
तोड़ रहे हो, हे उपकारी!

पहले मुझको शिष्य बनाया
हाथ पकड़ चलना सिखलाया
सीख लिया जब हमने चलना
बेदर्दी से हाथ छुड़ाया

माना तुम निज घट के वासी
मुक्ति – वधु ही तुमको प्यारी

नेह रहा न तुमको तन से
नहीं प्रयोजन घर आँगन से
मन – मंदिर में तुम जा बैठे
लगन लग रही निज चेतन से

कब करुणा बरसाओगे तुम
बनकर के फिर करुणाधारी

हाथ रखा जब सिर पर मेरे
मुझे लगा सचमुच तुम मेरे
क्योंकि ज्ञानज्योति से अपनी
किया है रोशन साँझ सबेरे

अब इतने क्यों निष्ठुर होकर
छोड़ रहे हो प्रीति हमारी

20.09.2005
(सिंगोली)

अपना दर्श दिखाओ गुरुवर

अब न और सताओ गुरुवर
अपना दर्श दिखाओ गुरुवर

मेरे पाँव पड़ी जंजीरें
गम की हरपल चलें समीरें
मिले चरण स्पर्श तुम्हारा
मिट जाती भव-भव की पीरें

अन्तर की आवाज हमारी
अपने हृदय सजाओ गुरुवर

अँखियाँ बन्द करूँ या खोलूँ
मौन रखूँ या मुख से बोलूँ
तुम ही हृदय समाये गुरुवर
अप्रत्यक्ष दरस कर डोलूँ

फिर भी चैन नहीं पाता हूँ
सिर पे पिछी लगाओ गुरुवर

तुम हो राम अहिल्या हम हैं
तुम महावीर चन्दना हम हैं
तुम बिन जीवन सूना-सूना
तुम बिन अँखियाँ रहती नम हैं

मीरा को है अमृत प्याला
चाहे जहर पिलाओ गुरुवर

22.09.2005
(सिंगोली)

मिट्टी तपकर इठलाती है

मिट्टी तपकर इठलाती है
कुंभकार का यश गाती है

मिटना पिटना अति दुःखकारी
किन्तु समर्पण मन में भारी
प्रतिफल मिट्टी ने ही पाया
कुंभकार ने देह सँवारी

गुरू के प्रति समर्पित रहना
मुक्ति वधु की पहली पाती है

पानी, डंडा, चाक खिलौना
फिर अग्नि पर लगा बिछौना
कुंभकार कितना बेदर्दी
तपा मिट्टी का कोना-कोना

सहनशीलता जिसने सीखी
रिश्तों में बहार आती है

मैं मिट्टी सा शिष्य तुम्हारा
कुम्भकार बन हमें सँवारा
चोट तुम्हारी सबने देखी
किंतु न देखा हाथ सहारा

चोट नहीं बस हाथ देखना
मिट्टी की यह परिपाटी है

22.09.2005
(सिंगोली)

तुमने अपना फर्ज निभाया

तुमने अपना फ़र्ज़ निभाया
फूलों जैसा हमें खिलाया

मैं था पत्थर एक राह का
जीवन जीता रहा स्याह सा
जब से नाथ! सँभाला तुमने
कोहिनूर हूँ हर निगाह का

मैं जिस काबिल था वह तुमने
मेरे अन्दर भाव जगाया

तुमनें जो उपकार किये हैं
वे सब जलते हुये दिये हैं
रात अमावस सी काली है
किन्तु हाथ हम लिए हुए हैं

ऐसे इस कलिकाल में तुमने
हमको सच्चा मार्ग बताया

मन में गूँज रही शहनाई
विराग नाम से बजे बधाई
अनुप्रेक्षा का आँचल सिर पे
देख प्रकृति फूली न समाई

मैं हूँ कौन, कहाँ से आया?
वस्तु – स्वरूप हमें समझाया

22.09.2005
(सिंगोली)

तुमसे प्रीति लगाई साईं

इन्द्रभूति-महावीर के नाईं
तुमसे प्रीति लगाई साईं

भव-भव में तुमने समझाया
मैं बुद्धु कुछ समझ न पाया
चन्दन भार गधा ज्यों ढोता
शास्त्र – ज्ञान से दर्प बढ़ाया

अब देखा श्रद्धा से तुमको
नाथ! सहज आँखें भर आईं

अब न कोई दर्प रहा है
नहीं हास्य कंदर्प रहा है
थिति-अनुभाग बढ़ाने – वाला
ना कषाय का सर्प रहा है

मन की चंचलता मिटते ही
मिटती योगों की चपलाईं

रूप हमारा खिला-खिला है
निज स्वरूप अब आन मिला है
भेद – ज्ञान ज्योति प्रगटी है
द्रव्य – भाव – नोकर्म जला है

सच्ची श्रद्धा के अभाव में
देहें अब तक खूब जलाईं

23.09.2005
(सिंगोली)

साथी तुमसा आज मिल गया

साथी तुमसा आज मिल गया
मुक्ति पथ का राज मिल गया

मैं भव वन में भटक रहा था
गम के आँसू गुटक रहा था
कर्म – बली मुझको अनजानी
चारों गति में पटक रहा था

चरणों का स्पर्श क्या किया
मुझको जैसे ताज मिल गया

अपना घर मैं भूल गया था
इन्द्रिय सुख में फूल रहा था
पर्यायों के सर्कस में ही
मैं अनादि से झूल रहा था

तेरी हित-मित प्रिय वाणी में
निज घर का आगाज़ मिल गया

अनुगामी हूँ नाथ तुम्हारा
चाहूँ हर पल साथ तुम्हारा
संघर्षों में न घबराऊँ
सिर पर हो गुरु हाथ तुम्हारा

मंजिल तक पहुँचाने वाला
मुझको श्रेष्ठ जहाज मिल गया

23.09.2005
(सिंगोली)

तुमने धीरज हमें बँधाया

नाथ! आज जब संकट आया
तुमने धीरज हमें बँधाया

साँझ आज की थी अलबेली
बनकर आई नाथ! पहेली
मैं निर्बल सुलझा न पाया
अरहनाथ ने बाधा झेली

लखकर मूरत अरहनाथ की
स्वामिन्! संकट भी पछताया

उत्सव था प्रभु की भक्ति का
भक्त-भक्त की अभिव्यक्ति का
कमठ कोई पानी ले आया
किया प्रदर्शन निज शक्ति का

पांडाल में आकर उसने
अपना तांडव खूब दिखाया

अरहनाथ की प्रतिमा प्यारी
मनभावन है अतिशय – कारी
पाण्डुशिला पर शोभित होती
अरहनाथ आतम हितकारी

क्षमा माँगता अरहनाथ से
गर कर्तव्य निभा न पाया

23.09.2005
(सिंगोली)

हम भँवरा तुम पुष्प विराग

हम भँवरा तुम पुष्प विराग
पीने आया ज्ञान पराग

गुण गाना ही मेरा गुंजन
राग-द्वेष से हो मन भंजन
रत्नत्रय गुलशन को पाकर
प्रगटाया निज रूप निरंजन

मुक्ति वधू ने चाहा मुझको
मेरा भी उससे अनुराग

हे विराग! बगिया के माली
फैली संयम की हरियाली
निज स्वभाव में विचरण करते
पात-पात हर डाली-डाली

वीतराग छवि का शुभदर्शन
गुरूवर मेरा अहोभाग

खिले बाग में पुष्प अनेक
किंतु अनेकों में तुम एक
पाँख-पाँख में भरी सरलता
हर्षित रोम-रोम प्रत्येक

ओ जीवन महकाने – वाले
तुम हो पुष्कर तुम्हीं प्रयाग

24.09.2005
(सिंगोली)

उभरी नयनों में छवि तेरी

उभरी नयनों में छवि तेरी
लगता किस्मत अच्छी मेरी

निश्चल हो तुम निर्विकार हो
शुद्धातम के संस्कार हो
गुरूवर तुम मेरी अनुभूति
मेरे चिन्तन की पुकार हो

मन – मन्दिर में हमने गुरूवर
बस तेरी तस्वीर उकेरी

त्याग तपस्या की तुम मूरत
सुन्दर सुगढ़ सलोनी सूरत
करूणा रस छलकाने – वाले
मुझे हर कदम तेरी जरूरत

मिल जाये आशीष मुझे गर
मिट जाये भव-भव की फेरी

युगों-युगों से आश लगी थी
अन्तर मन में प्यास जगी थी
हे गुरूवर बिन तेरे मुझको
सारी दुनियाँ उदास लगी थी

आलोकित हैं नयन हमारे
मिटी अमावस रात घनेरी

24.09.2005
(सिंगोली)

दर्पण तोड़े कई हजार

दर्पण तोड़े कई हजार
नहीं दर्प में आई दरार

सुन्दर रूप मिला इतराया
निज स्वरूप को समझ न पाया
रूप हीन को लज्जित करके
मन ही मन फूला न समाया

अहंकार के कारण मानव
पढ़ लिखकर भी रहा गँवार

कल तक मधुर प्रेममय जीवन
दाम्पत्य लगता था मधुबन
अब नित लड़ना और झगड़ना
फिर तलाक का भी आवेदन

अहम्भाव जब आता भैया
आपस में होती तकरार

सगे पराये हो जाते हैं
रिश्ते क्षण में खो जाते हैं
भरत बाहुबलि दोनों भाई
बीज बैर का बो जाते हैं

एक अहम् के कारण देखो
हुआ कलंकित यह परिवार

24.09.2005
(सिंगोली)

याद तुम्हारी जब आती है

याद तुम्हारी जब आती है
आँख हमारी भर आती है

हे विराग गुरू! तुम वैरागी
अन्तर-बाह्य ग्रंथ के त्यागी
शिष्यों का संग्रह करके भी
निज स्वभाव में तुम अनुरागी

मोक्षमार्ग पर चलते-चलते
तेरी छवि उभर आती है

मैं भूलों का रहा खजाना
मुझे आपने अपना माना
भव सागर में डूब रहा था
श्री चरणों में मिला ठिकाना

गुरूवर वात्सल्य की सरिता
मेरे मन को नहलाती है

गुरूवर हँसना और हँसाना
कभी डाँटना कभी मनाना
अन्तराय जब मुझको आते
सिर पर हाथ मन को बहलाना

गुरूवर हर अध्यात्म की बातें
मेरे जीवन की थाती है

25.09.2005
(सिंगोली)

जब-जब तेरा ध्यान लगाया

जब-जब तेरा ध्यान लगाया
तुमको नाथ! हृदय में पाया

सहन नहीं अब विरह तुम्हारा
रोम-रोम ने तुम्हें पुकारा
अँखियाँ तकती राह तुम्हारी
है अतीत का मिलन सहारा

मेरी कविता, गजल, गीत में
और स्वरों में तू ही समाया

तुम अतीत हो तुम्हीं अनागत
वर्तमान नित करता स्वागत
तेरे पगतल की आहट को
सुनने आतुर है शरणागत

सूरज चंदा बनकर खोजूँ
मैं दिन-रात तुम्हारा साया

जब बसन्त का मौसम आया
सबका अतिशय मन हर्षाया
किंतु तुम्हारे बिन हे स्वामी!
मुझे बसन्त जरा न भाया

सच कहता तुमसे मिलने पर
लगता अब बसन्त है आया

26.09.2005
(सिंगोली)

सद् चरित्र की खान तुम्हीं हो

सम्यग्दर्शन – ज्ञान तुम्हीं हो
सद्चरित्र की खान तुम्हीं हो

मेरा पथ तुम मेरी मंजिल
कदम-कदम की खुशियाँ स्वप्निल
मुझको आकर नाथ! जगाना
थक जाऊँ, हो जाऊँ गाफिल

मैं निर्द्वन्द्व सदा विचरूँगा
जब तक जीवनदान तुम्हीं हो

जीवन का आगाज तुम्हीं हो
जीने का अन्दाज तुम्हीं हो
जिससे उड़ना सीखा है वो
पंख और परवाज तुम्हीं हो

नीलगगन के भी आँचल में
नाथ! मेरी पहिचान तुम्हीं हो

सागर की लहरों सा जीवन
बनता और विघटता प्रतिक्षण
जिसने चरण पखारे गुरु के
होता उसका नित अभिनंदन

मेरी श्रद्धा से अनुप्राणित
मन मुरली की तान तुम्हीं हो

27.09.2005
(सिंगोली)

गुरुवर हर भावना हमारी

गुरूवर हर भावना हमारी
आप बिना लगती है क्वँारी

नाथ! चेतना हुई सयानी
समकित से खिल उठी जवानी
कर्म – सेज पर सोने आतुर
नहीं कर्म की ये दीवानी

विराग नाम अधरों पे हरपल
अन्तर में तस्वीर तुम्हारी

स्वर्ण – भूषण से विवर्जित
सहज सुन्दरता प्रवर्धित
मदन के सौन्दर्य का भी
कर रही है मान मर्दित

नाथ! तेरी इक नजर से
बढ़ रही इसकी खुमारी

अनादि के तोड़ बन्धन
कषायों के छोड़ क्रन्दन
शुद्ध-शुभ की रागिनी गा
कर रही दिन – रात वन्दन

चेतना के मौन स्वर में
हूँ निरंजन निर्विकारी

28.09.2005
(सिंगोली)

शब्द-शब्द में आओ गुरुवर

शब्द-शब्द में आओ गुरुवर
बगिया काव्य खिलाओ गुरुवर

तुम मेरे भावों का चन्दन
मेरे प्राणों का स्पन्दन
चिन्तन की उत्तान – चूल तुम
श्रेष्ठ हिमालय नित अभिवंदन

मन-जीवन की हो पवित्रता
गंगा आज बहाओ गुरुवर

काव्य सिंधु की गहराई को
छन्द घटा की अमराई को
मैं अबोध बालक न जानूँ
शब्द-शब्द की कुड़माई को

हो अभिभूत लगाई बगिया
आकर तुम महकाओ गुरुवर

कसर रहे न मन में कोई
तुम बिन इस जीवन में कोई
काव्य क्षितिज पर देकर दस्तक
मिलन करो मुझसे हमजोई

हमने प्रतिक्षण तुम्हें पुकारा
मुझको पास बुलाओ गुरुवर

29.09.2005
(सिंगोली)

हम पगतल की धूल तुम्हारे

हम पगतल की धूल तुम्हारे
तुम बगिया के फूल हमारे

नलिनी – दल पर बैठी शबनम
मुक्ताफल सी चमक रही है
भोर प्रभाकर के आने पर
कांतिमान हो दमक रही है

प्रियवर! मैं वह शबनम जल हूँ
दर्शनीय तुझ फूल सहारे

निश्छल प्रेम किया है तुमसे
नाता जोड़ लिया है तुमसे
प्रेम त्याग से अनुरंजित है
अर्पण सीख लिया है तुमसे

मैं सरिता नित बहने वाली
साथी! तुम अनुकूल किनारे

सबसे प्यारा तेरा दामन
जब से थामा आया सावन
हाथ रखा जो सिर पे तुमने
हुई चेतना मेरी पावन

ओ मेरे सपनों के साथी
एक तुम्हीं जो भूल सुधारे

30.09.2005
(सिंगोली)

अपने पास बुलाना गुरुवर

मुझको नहीं भुलाना गुरुवर
अपने पास बुलाना गुरुवर

नाथ! समर्पण के मन्दिर में
तेरी मूरत तेरी पूजा
हूँ एकाकी, तुझसे बातें
इस बिन मुझको काम न दूजा

अब नीरस सावन के झूले
अपनी राह चलाना गुरुवर

ओ साथी! सपनों में आना
मिलने का क्या खूब बहाना
किंतु नहीं संग दर्पण में तुम
लगता दर्पण हुआ पुराना

वीतराग पथ से न भटकूँ
दीपक हृदय जलाना गुरुवर

मौन छवि भी तेरी प्यारी
अँखियाँ हर्षित हों अतिभारी
वाणी जैसे सरसिज खिलते
तत्व – देशना मंगल – कारी

अपने हितकर उपदेशों से
मेरा मन बहलाना गुरुवर

01.10.2005
(सिंगोली)

जब से छेड़ी संयम तान

जब से छेड़ी संयम तान
लगती है दुनिया सुनसान

जब से जागा है अन्तर – बल
चित्त – वृत्तियाँ लगतीं दुर्बल
अब अनन्त की चाह जगी है
सहज चेतना का अब सम्बल

बोध हुआ अर्हन्तप्रभु का
जहाँ लघु, आकाश वितान

जड़ कर्मों ने अर्ज किया है
राग-द्वेष ने कर्ज लिया है
नहीं जानते हम अन्याय
फल दे अपना फर्ज किया है

राग-द्वेष के व्यापारों में
उलझा था चेतन – विज्ञान

इन्द्रिय सुख की क्षणिकाओं में
जीवन खोया मृण्माओं में
तन के प्याले तोड़े इतने
नहीं गणित की गणनाओं में

कलयुग की कोरी बातों में
हुआ पूज्य मेरा पाषाण

02.10.2005
(सिंगोली)

रखा जब-जब हाथ सिर पर

रखा जब-जब हाथ सिर पर
रहा मेरा पुण्य अवसर

सच मेरे मानस पटल पर
चल रहीं बीती हवायें
मौन हूँ पर टेर देती
विरह की मीठी सदायें

रहोगे जीवन में मेरे
संत में अनुस्वार बनकर

त्याग ही महिमा तुम्हारी
ध्यान ही गरिमा तुम्हारी
चेतना के सजग प्रहरी
साधना तुम बिन कुँवारी

खिल-खिलाकर हँस रही
मुक्ति रमा भी आज तुम पर

कोटि वंदन तुम चरण में
रहूँ नित तेरी शरण में
आप जैसी कर दिखाऊँ
साधना निज आचरण में

दिया जो स्नेह अनुपम
नहिं भुला पाऊँगा गुरूवर

03.10.2005
(सिंगोली)

सिर्फ तेरा प्यार पाऊँ

किस विधि उपहार पाऊँ
सिर्फ तेरा प्यार पाऊँ

नम्र होती डालियाँ भी
कह रहीं फल आ गये हैं
गगन से उतरे परिंदे
कह रहीं फल भा गये हैं

मिलन की इस शुभ घड़ी सा
नाथ! मैं त्यौहार पाऊँ

कश्तियाँ ही जानती हैं
नाथ! सागर की लहर को
बस्तियाँ ही जानती हैं
आँधी-तूफाँ के कहर को

लहर, तूफाँ के कहर में
आपका दीदार पाऊँ

माधवी कोमल लतायें
तरूवरों से जा लिपटती
नव – वधू प्रियतम को पाके
बाजुओं में जा सिमटती

नाथ! चरणों से लिपटकर
सुखद अश्रुधार पाऊँ

04.10.2005
(सिंगोली)

मुझे न कोई गीत सुनाओ

मुझे न कोई गीत सुनाओ
गुरु विराग की प्रीति सुनाओ

जो अडिग उपसर्ग में भी
साम्य में उत्सर्ग में भी
देह में रहकर विदेही
सिद्ध सम अपवर्ग में भी

मुक्ति मीरा बन पुकारे
शीघ्र मेरे मीत आओ

जो सुबुधि छैनी लिए हैं
अति परम पैनी लिए हैं
राग, शुद्ध विराग उनका
भेदकर जैनी हुये हैं

प्रगट हो भेदज्ञान ऐसा
आध्यात्म संगीत सुनाओ

अचल रहते ध्यान में जो
क्रिया करते ज्ञान में जो
हृदय में ऋजुता अलौकिक
नहीं रहते मान में जो

तोड़ दो सब मोह बंधन
कर्म की रीति मिटाओ

05.10.2005
(सिंगोली)

बहुत याद आते हो गुरुवर

मन को तुम भाते हो गुरुवर
बहुत याद आते हो गुरुवर

जीवन पुष्प खिलाया तुमने
अंजुलि अमिय पिलाया तुमने
चेतन रथ का बना सारथी
मुझसे मुझे मिलाया तुमने

रहकर दूर हमारी उलझन
तुम ही सुलझाते हो गुरुवर

भाव सृजन में आई तरलता
यौवन पा हरषाई सरलता
वाणी वीणा मधुर सादगी
घूँघट डाले आई अमलता

अथिर जगत में भटक न जाना
हर पल समझाते हो गुरुवर

कोमल कर पल्लव प्रभु तेरा
अहोभाग! हो मस्तक मेरा
ज्ञान सुधारस घोल घोलकर
मिटा दिया अज्ञान घनेरा

जैसे जल बिन मीन तड़पती
ऐसे तड़पाते हो गुरुवर

05.10.2005
(सिंगोली)

मत मेरा उपहार देखो

समर्पित व्यवहार देखो
मत मेरा उपहार देखो

दूर ही रहना था गुरुवर
नयन में फिर क्यों समाये
क्यों बने हमराही पथ के
हृदय में क्यों आप आये

ओ मेरे संयम के साथी
हृदय की मनुहार देखो

छोड़ तुम पथ में एकाकी
ले रहे हो क्यों परीक्षा
नाथ! मैं इसको भी राजी
कर रहा पल-पल प्रतीक्षा

जीत लूँगा दिल तुम्हारा
प्रेम से इक बार देखो

फूल हूँ तेरे चमन का
चूमते हैं नयन सबके
किंतु मैं तुम बिन अधूरा
कह रहा गुरुदेव कब से

चाह है मुक्ति वधू की
बस उमड़ता प्यार देखो

05.10.2005
(सिंगोली)

दशलक्षण का सार तुम्हीं हो

दशलक्षण का सार तुम्हीं हो
मुक्ति का आधार तुम्हीं हो

क्षमा धर्म पा क्रोध मिटाते
मान मिटा मृदुता को लाते
ऋजुता को निज में प्रगटाते
शौचधर्म का बाग खिलाते

वीतरागता के दर्पण में
अर्हन् का आकार तुम्हीं हो

सत्य साधना में प्रगटाया
संयम का त्यौहार मनाया
तप से निज को तपा तपाकर
त्याग विभाव भाव का पाया

भेदज्ञान के वातायन में
सद्गुण के गुलजार तुम्हीं हो

चेतन ग्रन्थ ममत्व भी हारा
आकिन्चन्य धर्म के द्वारा
शुद्ध-बुद्ध अविकार निरंजन
ब्रह्मचर्य ने रूप सँवारा

हे शिवपथ के निर्द्वन्द्व पथिक
भविजन के तारणहार तुम्हीं हो

06.10.2005
(सिंगोली)

तुम मेरे शृंगार गुरुवर

तुम मेरे शृंगार गुरुवर
मुक्ति पथ में प्यार गुरुवर

अस्थियाँ अब तक जलाईं
आस्था अब जल रही है
मोह की घनघोर काली
रात पल-पल ढल रही है

मौत पर अब लिख सकूँगा
मुक्ति सजनि का इज़हार गुरुवर

राह काँटों की चुनी है
देशना तेरी सुनी है
नहीं लगता अब कहीं मन
चारित्र की चादर बुनी है

श्रद्धा का सिंदूर मैं
भरता रहूँ हर बार गुरुवर

चाह न मुझको जहाँ की
चाह न अब आसमाँ की
मिल गई शुभ चरण छाया
पूर्ति जिनवाणी माँ की

भावना पाऊँ तुम्हारा
हर जनम में द्वार गुरुवर

07.10.2005
(सिंगोली)

डाल पे बैठी कोयल गाती

डाल पे बैठी कोयल गाती
माटी का तन होगा माटी

माटी को दिनरात सजाया
सुन्दरता पाकर इठलाया
मीठे व्यंजन खिला-खिलाकर
माटी का संस्कार बढ़ाया

साथ निभा ले कितना भी तू
साथ निभायेगी ना माटी

रिश्ते नाते खूब बनाती
सम्बन्धों की सैर कराती
निज स्वभाव से भुला-भुलाकर
चेतन को तन में भरमाती

भव-भव में आने जाने की
चलती रहती है परिपाटी

उड़ती जब माटी से चिड़िया
जलती माटी ज्यों फुलझड़िया
माटी की जो करें सुरक्षा
रहा नहीं चेतन बागड़िया

पड़ी रहेगी सारी दौलत
साथ न जायेगी इक टाठी

07.10.2005
(सिंगोली)

हे तप तीर्थ! तुम्हें शत वन्दन

तप कर देह बनाई कुन्दन
हे तप तीर्थ! तुम्हें शत् वंदन

तोड़ कामना के घट सारे
हुये जगत से न्यारे-न्यारे
जग में रहकर के भी गुरूवर
छोड़ कषायों के चौबारे

ज्योतिर्मय हो ध्रुव तारे सम
महावीर के हे लघुनन्दन!

कल-कल छल-छल सरिता बहती
प्रतिक्षण बढ़ो-बढ़ो नित कहती
चट्टानों से टकराती है
कदम-कदम पर पीड़ा सहती

सरिता बनकर बहने – वाले
भयाकुलित कर्मों के बन्धन

वाणी से निज अनुभव गाया
कुन्दकुन्द का सार समाया
सच कहता मुझको लगते हो
तीर्थंकर की तुम प्रतिछाया

जहाँ चरण रखते हो अपने
वह माटी भी होती चंदन

08.10.2005
(सिंगोली)

रिश्ता लगता युगों पुराना

हाथ पकड़कर मुझे चलाना
रिश्ता लगता युगों पुराना

अपने में रहकर भी गुरुवर
तुमने मुझको अपना माना
इसीलिए एकाकी पथ पर
मन बस तेरा हुआ दीवाना

कठिन नहीं वह नामुमकिन है
गुरु बिन मंजिल को पा जाना

जब-जब मन में आई निराशा
तुमने खूब बँधाई आशा
नाथ! मिले न जब तक मुक्ति
तुम्हें चाहता प्रेम का प्यासा

कभी भूल न पाऊँगा मैं
पथ पर चलते मन बहलाना

कितना गहरा प्यार तुम्हारा
और मृदुल व्यवहार तुम्हारा
कभी डाँटना कभी मनाना
माँ जैसा उपकार तुम्हारा

मैं नवजात शिष्य हूँ शिशु सा
अंक शैय्या में मुझे सुलाना

09.10.2005
(सिंगोली)

नाथ! हृदय में बसा लिया है

तुमको अपना बना लिया है
नाथ! हृदय में बसा लिया है

सद्गुण नीर भरूँ निज घट में
बना हुआ हूँ मैं पनिहारिन
नाथ! पूज्यता प्रभु सी पाऊँ
इसीलिए मैं बना पुजारिन

हमने यादों के दर्पण में
गुरूवर तुमको छुपा लिया है

कर्मों के बन्धन तोड़ूँगा
राग द्वेष का घट फोड़ूँगा
सहज शुद्ध अविचल अविनाशी
सिद्धों से नाता जोड़ूँगा

भटक न जाऊँ किंतु राह में
तुम से रिश्ता सजा लिया है

नहीं हमारा रिश्ता कच्चा
गुरू शिष्य का रिश्ता सच्चा
मुझे नहीं परवाह जरा भी
दुनिया बुरा कहे या अच्छा

सोलह वानी शुद्ध शिष्य हम
सब कुछ अर्पित तुम्हें किया है

10.10.2005
(सिंगोली)

मुरझाये गुल आप खिलाते

मुरझाये गुल आप खिलाते
बुझे दीप को आप जलाते

टूट गये हो जिनके सपने
बिछुड़ गये हों जिनके अपने
चतुगर्ति में ठोकर खाकर
कदम-कदम जो लगे सिसकने

उनको अपनापन दिखलाकर
तुम उनका विश्वास बढ़ाते

था मेरा जीवन एकाकी
नाथ! आपने बाँधी राखी
मोक्षमार्ग दिखलाकर तुमने
बना दिया फिर से एकाकी

इस एकाकीपन का अंतर
है श्रद्धेय तुम्हीं बतलाते

मृत्यु उनको नहीं डराती
ना अनहोनी उन्हें कँपाती
जिसने अपने कदम-कदम पर
तुमको नाथ! बनाया साथी

उपदेशों की जन्म घूँटी तुम
शिष्यों को हर रोज पिलाते

11.10.2005
(सिंगोली)

दर्द भी लगता है प्यारा

गुरूवर जुदाई का तुम्हारा
दर्द भी लगता है प्यारा

आपके अनुसार स्वामिन्
मोक्ष पथ पर चल रहा हूँ
आस्रवों से मैं ठिठककर
निर्जरा में पल रहा हूँ

ओ हमारे मार्गदृष्टा
हर कदम तुमको पुकारा

शुद्ध हूँ चैतन्य हूँ मैं
व्योम से अति भिन्न हूँ मैं
अचल हूँ निर्बन्ध हूँ
परिपूर्ण ज्ञानानंद हूँ मैं

आपने मुझको बताया
नाथ! मंजिल का किनारा

मिथ्यात्व के कर्मावरण को
तोड़ा ले प्रज्ञा की छैनी
कषायों का दुर्ग भेदा
आपकी है दृष्टि पैनी

सच कहूँ गुरूदेव हमको
हर घड़ी तेरा सहारा

12.10.2005
(सिंगोली)

मुक्ति वधु से हो कुड़माई

मुक्ति वधु से हो कुड़माई
मन में गुरूवर यही समाई

वीतराग परिणति में डोलूँ
वीतरागता का रस घोलूँ
वीतरागता में रमकर ही
सिद्ध सदन में प्रभु संग हो लूँ

जग में चेतन और अचेतन
वस्तु सारी रही पराई

महल-मसान मैं नहीं जानूँ
भवन और वन न पहिचानूँ
चिदानन्द चिद्रूप ज्ञान – घन
तन्मय हो मैं अपना मानूँ

सुख पाया शुद्धात्म अतीन्द्रिय
ज्ञान – ज्योति जिसने प्रगटाई

मैं स्वभाव सुख का हूँ प्यासा
इन्द्रिय सुख न चाहूँ जरा सा
अहोभाग्य गुरू आप मिले हो
देते प्रतिक्षण मुझे दिलासा

अन्तर परिणति जान हमारी
तुमने शिवपथ राह दिखाई

13.10.2005
(सिंगोली)

मैं तुलसी तेरे आँगन की

मैं तुलसी तेरे आँगन की
हूँ बहार गुरूवर सावन की

भक्ति ज्योत्सना प्रगटी मन में
ज्योतिर्मय श्रद्धा जीवन में
भूल नहीं सकता गुरूवर जो
सुख अनुभूति हुई दर्शन में

श्री चरणों का परस मिला जब
हुई चेतना यह पावन सी

शुद्ध आत्मा का नित चिंतन
अब न अठखेली करता मन
स्वानुभूति से जाना गुरूवर
हमने अपना रूप निरंजन

चिदानन्द चैतनरस चाहूँ
और चाह तेरे दामन की

जनम-जनम में मीत बनाऊँ
गुरूवर निर्मल प्रीति लगाऊँ
शुद्ध चित्त के वातायन में
वीतराग संगीत सजाऊँ

गीत तुम्हारे ही गाऊँगा
बनकर मीरा वृंदावन की

14.10.2005
(सिंगोली)

दीवारें सब टूट जायेंगी

दीवारें सब टूट जायेंगी
हंस उड़ेगा छूट जायेंगी

पल दो पल के हैं सब साथी
पोता-पोती, नातिन-नाती
चलाचली का दिन जब आये
साथ न चलते सगे संगाती

भूल स्वयं को खोया जिसमें
वही बहारें रूठ जायेंगी

जितना चाहे उतना बुन ले
रिश्तों का तू जाल ओ पगले
आयेगी जब मौत दुल्हनिया
ले जायेगी तुझको सुन ले

बिम्ब और प्रतिबिम्ब निरर्थक
आँखें ही जब फूट जायेंगी

सर्व सम्पदा पड़ी रहेगी
बंगला कोठी खड़ी रहेगी
नये जाल की फिर तैयारी
नई कामना अड़ी रहेगी

इच्छाओं की दस्यु सुन्दरी
चुपके-चुपके लूट जायेंगी

15.10.2005
(सिंगोली)

मन को अब सतरंगी बातें

मन को अब सतरंगी बातें
ना दिन भाती, न अब रातें

शुद्धातम के गीत सुनाओ
चिदानंद संगीत सुनाओ
हे गुरुवर! शुद्धोपयोग की
लोरी मुझको रोज सुनाओ

चलते-फिरते सोते-जगते
याद रखूँगा ये सौगातें

मैं स्वातम रस चखने – वाला
ना चाहूँ विषयों का हाला
शुद्ध-बुद्ध अविनाशी आतम
निज में सहज परखने – वाला

नाथ! चपलता चंचल मन की
देती रही अभी तक मातें

भेदज्ञान की प्रगटी निधियाँ
जानी आत्मज्ञान की विधियाँ
सर्वश्रेष्ठ पुरुषार्थ स्वाश्रय
सत्य धर्म की ये गतिविधियाँ

नाथ! स्वाश्रय बिन देखी हैं
चतुर्गति की सब हालातें

15.10.2005
(सिंगोली)

कंचन जैसा तन पाया है

कंचन जैसा तन पाया है
कंचन भी लख शर्माया है

वीतराग की चूनर ओढ़ी
रागभाव की चादर छोड़ी
शुद्ध चेतना के आश्रय से
इच्छाओं की गागर फोड़ी

सुथिर ध्यान की मुद्रा अद्भुत
सहज मोक्षपथ दर्शाया है

दर्शनमोह की छोड़ी नागिन
मिथ्यामति हो गई अभागिन
प्रगट किया संयम स्वभाव में
सहज चेतना हुई सुहागिन

निज अखण्ड ज्ञायक स्वभाव में
अर्हन्तों सा सुख छाया है

द्रव्य-भाव-नोकर्म का डेरा
मिटा दिया अज्ञान अँधेरा
भूल स्वयं की मिटी हुआ जब
वीतराग विज्ञान सवेरा

प्रवचन में शुद्धात्मज्ञान का
अमृत तुमने बरसाया है

15.10.2005
(सिंगोली)

हृदय सेज पर आओ स्वामी

हृदय सेज पर आओ स्वामी
प्रेम नीर बरसाओ स्वामी

नहीं दूरियाँ मुझको भाती
आँखें अश्रुजल बरसाती
वीतराग पथ के संवाहक
मेरी साँसे तुम्हें बुलाती

चरण छाँव में मुझे बिठाकर
मुक्ति गीत सुनाओ स्वामी

संयम पुष्प बिछाए हमने
करूणा दीप जलाए हमने
नाथ! चतुर्विध आराधन के
वन्दनवार सजाए हमने

बहुत हो गई प्रभु! इंतहा
अब मत और कराओ स्वामी

आँखें अपलक पथ निहारती
नाथ! चेतना पग पखारती
स्वर्णथाल न दीप न बाती
रत्नत्रय से करूँ आरती

रखकर सिर पे हाथ हमारे
शुभ अहसास कराओ स्वामी

15.10.2005
(सिंगोली)

तुम सृजन की तूलिका हो

तुम सृजन की तूलिका हो
भाव मन की चूलिका हो

चित्त – वृत्ति खो गईं हैं
हुई है चेतन अलंकृत
कामना के पंख टूटे
साधना हो रही झंकृत

कर्म के अँधियार में तुम
चाँद सी ज्योतित शिखा हो

कषायों के कहकहों ने
ज्ञान को धूमिल किया था
भाव – कर्मों ने नदी का
जैसे शीतल जल पिया था

सच धुले कल्मष उसी का
जिसे गुरु, प्रभु सा दिखा हो

बाँधकर शुभ-अशुभ घुँघरू
खूब नाचा मोह पथ पर
बेचकर निज ज्ञानधन को
बढ़ाया व्यापार हँसकर

सृजन अक्षय वहीं जिसने
आप में आपा लखा हो

16.10.2005
(सिंगोली)

गुरुवर तेरा हस्ताक्षर हूँ

गुरुवर तेरा हस्ताक्षर हूँ
सहज पूर्ण हूँ अविनश्वर हूँ

तुम बिन ना अस्तित्व हमारा
पढ़ा तुम्हीं ने पृष्ठ हमारा
जिनवाणी सा रूप दे दिया
कोटि-कोटि उपकार तुम्हारा

सहज भाव से पूर्ण समर्पित
तुझ सागर की एक लहर हूँ

मैं मेरा पथ भी एकाकी
सिद्ध प्रभु सी मेरी झाँकी
नाथ! आप जैसे शिल्पी ने
मुझ प्रस्तर की कीमत आँकी

मैं टंकोत्कीर्ण ज्ञायक
अपने में अविचल मेरू शिखर हूँ

करता रहा कर्म अगुवाई
नाथ! चेतना हुई पराई
जड़ में हूँ पर नहीं हुआ जड़
निज स्वभाव की समझ है आई

मिटी भेद की सभी दीवारें
मैं अभेद का ही अनुचर हूँ

16.10.2005
(सिंगोली)

हे विराग चेतन अनुरागी

हे विराग चेतन अनुरागी
तीर्थंकर सम लगते त्यागी

छत्तीस मूलगुणों से मंडित
कहलाते आगम के पंडित
चर्या में अध्यात्म समाया
अनुभवते चैतन्य अखंडित

करता जो भवि राग आपसे
सच कहता वो हुआ विरागी

सहज पालते पञ्चाचार
शिक्षा-दीक्षा का अधिकार
हटा सहज कर्तृत्व बुद्धि से
हे निर्लेपी हे अविकार

जिसे मिला आशीष आपका
उसकी सचमुच किस्मत जागी

द्वादश तप से बने तपस्वी
दश धर्मों से बने मनस्वी
कितने गुण बतलाऊँ तुम्हारे
हे विराग गुरुदेव यशस्वी

रहकर शुभभावों में तुमको
लगन शुद्ध समरस की लागी

16.10.2005
(सिंगोली)

जब-जब तेरे गुण गाता हूँ

मैं ज्योतिर्मय हो जाता हूँ
जब-जब तेरे गुण गाता हूँ

पतझड़ में मधुमास सा लगता
मातम में उल्लास सा लगता
तेरी पावन स्मृतियों से
मन भी मुझको दास सा लगता

इसीलिए कर निश्चय – स्तुति
निज घावों को सहलाता हूँ

रोम-रोम आनंदित होता
चिदानंद जब अनुभव होता
प्रगटे चेतन राज की महिमा
भावकर्म शर्मिंदित होता

स्वाश्रय का पुरुषार्थ सतत् है
निज में निज को ठहराता हूँ

क्या बाँधेंगी कर्म जँजीरें
क्या विपाक में देगी पीरें
जहाँ चल रही शुद्ध ध्यान की
पल-पल हर पल नाथ! समीरें

वस्तु स्वभाव धर्म से मुक्ति
भविजन को भी बतलाता हूँ

17.10.2005
(सिंगोली)

प्रेरणा हो तुम हमारी

प्रेरणा हो तुम हमारी
जिंदगी तुमने सँवारी

नजर में गुरूवर तुम्हारी
प्रेम निर्झर बन के झरता
टूटते हैं राग-बंधन
नाथ! जिन नजरों में गिरता

हमने अपनी हर नजर से
हर नजर तेरी निहारी

आपका स्नेह अनुपम
सद्गुणों के आप संगम
सिसकती हर चेतना के
हो सहारे, आप हरदम

सच कहूँ गुरूदेव लगती
आपकी छवि प्यारी-प्यारी

प्रेय हो तुम, श्रेय हो तुम
हर घड़ी श्रद्धेय हो तुम
कर्म बल कितना दिखायें
किंतु अपराजेय हो तुम

आप समता रख चुकाते
कर्म की हर पल उधारी

17.10.2005
(सिंगोली)

किया नाथ! तेरा अभिवन्दन

क्यों ना टूटें अन्तर्बन्धन
जब नित करूँ तेरा अभिवन्दन

रिश्ते हैं सारे बेगाने
नाथ! स्वार्थ के सभी ठिकाने
देखा किंतु स्वार्थ के गिरते
इक दूजे को लगे गिराने

मृत्यु सदा हँसकर कहती है
लेती हूँ मैं सबका चुम्बन

अजर-अमर अविनाशी चेतन
माँग रही कर्मों से वेतन
चारों गति में भ्रमती-फिरती
देखा ना शुद्धात्म – निकेतन

पुद्गल आनंदित हैं, करके
चेतन रानी का आलिंगन

नाथ! चुनी है राह तुम्हारी
महक उठी जीवन की क्यारी
मृण्मय से अब नहीं वास्ता
चिन्मय पाया मंगलकारी

मुक्तिवधु की मधुर कल्पना
बढ़ा रही श्वाँस स्पन्दन

17.10.2005
(सिंगोली)

तुमने सच्ची प्रीति निभाई

तुमने सच्ची प्रीति निभाई
मुक्ति पथ की रीति बताई

मैं द्वन्द्वों से घिरा हुआ था
नाथ! मनोबल गिरा हुआ था
तुमने थामा हाथ हमारा
मैं तो पग-पग डरा हुआ था

जाग गया संकल्प हमारा
तुमने सम्यक् नीति सिखाई

रिश्ते कपड़ों जैसे बदले
तन-मन चेतन करके गँदले
किंतु मिला न सच्चा साथी
जो मेरे हालात समझ ले

अपने द्वारा अपने मन पर
तुमने सच्ची जीत सिखाई

सिसक रहा अब मन विद्रोही
देख मुझे पथ पर आरोही
सिद्धसदन पाकर ठहरूँगा
महावीर सम बना बटोही

हँसते रोते इस दुनिया से
तुमने सच्ची भीति सिखाई

17.10.2005
(सिंगोली)

निर्निमेष हो देखूँ चितवन

निर्निमेष हो देखूँ चितवन
ध्यान में तुम लगते हो भगवन्

अचल-अमल चेतन स्वरूप है
शुद्ध-बद्ध अविकल अनूप है
भेदज्ञान भी जहाँ ज्ञेय है
वो ज्ञायक है विशद रूप है

तन्मय होकर निज स्वरूप में
सहज वेदते सुख अनंत धन

जो भीतर जाये तर पाये
ध्यान-ध्येय-ध्याता मर जाये
चिदानंद अमृत तब बरसे
अहा! आत्मा खूब नहाये

डूब स्वयं में खोज रहे हो
निधियाँ शुद्ध ज्ञान, बल दर्शन

ज्ञानानंद स्वभाव शुद्धतम
जब प्रगटा, विघटा विभाव तम
परिणति में सिद्धों का अनुभव
अन्तर्दशा ज्ञानी की अनुपम

हुये निराश्रव कर्म उदय में
प्रगटा वीतराग संवेदन

17.10.2005
(सिंगोली)

सँकरी राह बिछे हैं काँटे

सँकरी राह बिछे हैं काँटे
सभी पथिक दुख किस विधि बाँटे

यद्यपि सबका पथ एकाकी
किंतु बनाये सबने साथी
सभी दुःखी हैं सभी क्लान्त हैं
राह तक रही सबकी माटी

कौन निभाये सच्ची प्रीति
दुष्कर है मन किसको छाँटे

बदल रहा सब कुछ क्षण-क्षण में
वर्तन रहा अनादि कण-कण में
इसीलिए तो ठिठक रहा हूँ
झूठ छिपा सम्बन्ध सृजन में

नहीं मिटेगा झूठ ये कोई
कितना समझाये या डाँटे

क्षणिक प्रीति करना प्रभु से कर
दिखा रहा जो सबको निज घर
चाह पुरातन छोड़ो बेटा
कदम-कदम समझाया गुरुवर

किंतु हमारा मन दौड़ा है
जहाँ लगी भोगों की हाटें

18.10.2005
(सिंगोली)

कश्ती ना इस पार डुबाओ

कश्ती ना इस पार डुबाओ
लो पतवार पार हो जाओ

हो दीवाना इन्द्रिय सुख का
निज साँसो का किया खात्मा
महज देह के आकर्षण में
स्वयं भुलाता रहा आत्मा

क्षणिक सुखों के बीहड़वन में
अपने मन को ना भरमाओ

इक दिन छूटेगा सब मेला
साथ नहीं जायेगा ढेला
ख्याल ख्वाब सब छिन जायेंगे
जायेगा तू हंस अकेला

कब से रीति निभाता आया
अब तो भैया कुछ शरमाओ

धर्मगुरू ने भी समझाया
धर्मग्रंथ ने भी फरमाया
सीख नहीं जब इनकी मानी
पर्यायों को व्यर्थ गँवाया

ले संयम पतवार हाथ में
तूफानों से भय मत खाओ

18.10.2005
(सिंगोली)

गुरुवर हर अहसास तुम्हारा

गुरुवर हर अहसास तुम्हारा
लगता मुझको अतिशय प्यारा

ज्यों प्रभात में सूरज आता
आते तुम स्मृति क्षितिज पर
आते हो फिर नहीं बिछुड़ते
यह वरदान तुम्हारा मुझ पर

चाह हृदय में है बस इतनी
बना रहे आशीष तुम्हारा

अगर देखना अपना चेहरा
मत देखो दर्पण में जाकर
हृदय हमारा बना आइना
देखो नाथ! समर्पण आकर

रहते हो सपनों में मेरे
मैंने हर क्षण तुम्हें पुकारा

महापुण्य का उदय हुआ जब
मेरा तुमसे मिलन हुआ तब
जन्म-जन्म तक न छूटेगा
स्वामिन्! बन्धन अमर हुआ अब

वीतराग स्वसंवेदन में
गुरुवर सहज बिछोह तुम्हारा

18.10.2005
(सिंगोली)

चरण चूमती है नित धरती

श्रद्धा भाव समर्पित करती
चरण चूमती है नित धरती

इसे रौंद देता पैरों से
होता कोई निष्ठुर इतना
प्रेम कल्पना ढह जाती है
चूर-चूर होता हर सपना

नाथ! आपके चरण पुष्प सम
छूकर वह रोमांच से भरती

इसने भी क्या किस्मत पाई
कहलाती है सबकी माई
किंतु मिला ना पुत्र आप सा
अतः तुम्हें पा अति हरषाई

स्वाभिन्! नाम मंत्र की माला
सुबह-शाम आठों याम सुमरती

जन्मों-जन्मों से थी प्यासी
किंतु बुझी न प्यास जरा सी
प्रवचन नीर बहाया तुमने
जन्म-जन्म की मिटी उदासी

गुरूवर तेरी पावन आभा
दुःखिया के हर दुःख को हरती

18.10.2005
(सिंगोली)

सन्त निष्पृही कहलाते हो

सन्त निष्पृही कहलाते हो
भक्तों के मन को भाते हो

करता जो भी दर्श तुम्हारा
पाता है वो हर्ष अपारा
दुःखियों का दुःख हरने – वाला
हे गुरूदेव! तुम्हारा द्वारा

शुभाशीष की मल्हम देकर
घाव सभी के सहलाते हो

तेज पुञ्ज है भाल तुम्हारा
हृदय शुद्ध सुविशाल तुम्हारा
बसा लिया गुरूदेव हृदय में
जीवन हुआ निहाल हमारा

तत्वज्ञान में करते केली
अपने मन को बहलाते हो

समिति गुप्ति व्रत तुमसे पावन
शुद्ध हुई चेतना अपावन
चरण शरण में लगता जैसे
पतझड़ में भी आया सावन

संयम रत्न बाँटने – वाले
गीत स्वानुभव के गाते हो

18.10.2005
(सिंगोली)

क्या एकाकी रह पाओगे?

मुझे छोड़ गर मुक्ति पाओगे
लेने मुझको पुनः आओगे

टूट न पायेगा यह रिश्ता
चाहे तोड़े कोई फरिश्ता
जहाँ समर्पण जुड़ा हुआ हो
वहाँ प्रेम न होगा सस्ता

मुक्ति – वधु की चाहने – वाले
क्या तुम मुझे भुला पाओगे

बाँध लिया है भक्ति डोर से
स्वयं बँधा श्रद्धा के छोर से
सच कहता गुरुदेव मुझे अब
भय न लगता कर्मचोर से

मेरी श्रद्धा भक्ति तोड़ के
क्या एकाकी रह पाओगे

जाते हो जिस पथ पे साथी
यद्यपि वह पथ है एकाकी
किंतु लक्ष्य है एक हमारा
अतः बना लो अपना साथी

अब तक तुमने साथ निभाया
क्या आगे न दुहराओगे

19.10.2005
(सिंगोली)

मेरे काव्य छन्द में आओ

मेरे काव्य छंद में आओ
कविता का सौन्दर्य बढ़ाओ

प्यारी-प्यारी कलम हमारी
नाथ! आपकी है दीवानी
रोज कराती मिलन आपसे
हुई जुदाई नाथ! पुरानी

कलम चूमती चरण आपके
गुरूवर इसका मान बढ़ाओ

कविता जब लेती अँगड़ाई
शर्मा जाती तब तरूणाई
देखा झाँक हृदय में इसके
तेरी ही तस्वीर समाई

परमशान्त अति सुन्दर चितवन
देखो प्रियवर! नजर उठाओ

कली-कली कर रही बगावत
फूल-फूल कर रहे शिकायत
हमें छोड़ हो गई विराग की
देखी तेरी खूब शराफ़त

मन्द-मन्द मुस्काई कविता
बोली संयम जीवन पाओ

19.10.2005
(सिंगोली)

सहज मुक्ति पथ दर्शाते हो

सहज मुक्ति – पथ दर्शाते हो
भविजन का मन हर्षाते हो

तीर्थंकर सी सभा तुम्हारी
नाथ! अलौकिक प्रभा तुम्हारी
आत्म प्रतीति होती उसको
जिस पर होती कृपा तुम्हारी

तत्वदेशना निज गागर से
दिव्यध्वनि सम बरसाते हो

मनमोहक है छवि आपकी
सहजकीर्ति हो रही आपकी
जिसने मन से ध्याया उसने
फोड़ी गागर स्वयं पाप की

हे स्वामिन्! तुम अशुभ भाव को
मिलने को भी तरसाते हो

मूलगुणों की बगिया प्यारी
खिली हुई है क्यारी-क्यारी
अमरपुरी से भी अति सुन्दर
छटा स्वानुभव की है न्यारी

वीतराग अविशुद्ध भाव ही
हर – क्षण हर – दम विकसाते हो

19.10.2005
(सिंगोली)

नहीं चाहिए मुझको ख्याति

नहीं चाहिये मुझको ख्याति
जो उपकार भाव को खाती

देखें हैं शिशु शिष्य अनेकों
जो ख्याति पाने टूटे हैं
लक्ष्य हीन होकर जो भटके
उपकारी गुरु से रूठे हैं

धर्मभावना को चुगकर के
जो अधर्म को ही प्रगटाती

गुरुआज्ञा लाती कुलीनता
मन में ना आती मलीनता
मोक्षमार्ग के अनुशासन से
अशुभभाव होता विलीन सा

पुनः छोड़ शुभभाव शुभ्रता
शुद्धभाव में बाधा लाती

इच्छाओं को दमन किया है
कलु-कषाय का वमन किया है
वीतराग ज्ञायक स्वभाव को
शुद्धभाव से नमन किया है

निष्कषायता से मुख मोड़े
जो कषाय का पाठ पढ़ाती

19.10.2005
(सिंगोली)

नाथ! मुझे निर्वाण चाहिए

मृत्यु का वरदान चाहिए
नाथ! मुझे निर्वाण चाहिए

टूटेगी साँसों की सरगम
हंसा अपने देश उड़ेगा
लाख चौरासी योनि भटके
राग-रंग से अगर जुड़ेगा

जिससे वज्र कर्म टूटेगा
वह सच्चा श्रद्धान चाहिये

मृत्यु यहाँ सभी को आती
अपने कुल का धर्म निभाती
राजा हो या रंक फकीरा
सबको अपने गले लगाती

स्वामिन्! शुक्लध्यान प्रगटाकर
मृत्यु का अवसान चाहिए

हे गुरूदेव तुम्हारा द्वारा
लगता सबको सबसे प्यारा
चलकर तेरे पदचिह्नों पर
मिल जाता भवसिंधु किनारा

सदा स्वानुभव की सरिता में
शुद्धातम का ध्यान चाहिए

19.10.2005
(सिंगोली)

मुझको खुशियाँ मिल गईं रे

मुझको खुशियाँ मिल गईं रे
मन की कलियाँ खिल गईं रे

जब से नाथ शरण में आया
अपना सिर चरणों में झुकाया
मिला परस गुरुदेव हाथ का
रोम-रोम मेरा हर्षाया

जीवन शुभ्र हुआ पूनम सा
मावस रतियाँ ढल गईं रे

गुरुवर साथ तुम्हारा भाया
मैं प्रतिबिम्ब तुम्हारी छाया
जहाँ-जहाँ तक जाओगे तुम
साथ चलूँगा बनकर साया

तीन लोक में सबसे सुन्दर
मुझको निधियाँ मिल गईं रे

तुमने मुझको पास बिठाया
शुद्धातम संग शयन कराया
दर्पण देकर निज ज्ञायक का
मेरा नव शृंगार कराया

भव वन में भटकाने वाली
विधि की विधियाँ जल गईं रे

20.10.2005
(सिंगोली)

फिर भी प्रेम दिया करते हो

विष सम घूँट पिया करते हो
फिर भी प्रेम दिया करते हो

इतना नेह कहाँ से पाया
समता – रस कैसे प्रगटाया
संघर्षों में भी मुस्काना
गुरुवर तुमने किस विधि पाया

काँटों में रहकर फूलों सा
जीवन आप जिया करते हो

सूर्य उदित होता इठलाता
साँझ हुई अस्ताचल जाता
किंतु आप दिन-रात प्रकाशित
ज्ञान – ज्योति से कैसा नाता

अपनी विद्या ज्ञान बढ़ाने
सबको ज्ञान दिया करते हो

वात्सल्य उर में लहराता
करुणाभाव सदा गहराता
नाथ! तुम्हारा हो जाता है
जो श्रद्धा से शीश झुकाता

परम शान्तमय आभा से तुम
हर दिल जीत लिया करते हो

20.10.2005
(सिंगोली)

गुरुवर मेरी ओर निहारो

गुरुवर मेरी ओर निहारो
बेटा कहकर मुझे पुकारो

मेरा हर आगाज तुम्हीं हो
मेरा हर अन्दाज तुम्हीं हो
मैं उड़ान भर सकूँ गगन तक
पंख और परवाज तुम्हीं हो

पाऊँ तुम जैसी सुन्दरता
अपने हाथों मुझे शृंगारो

हमें हमारा पथ दिखलाया
चलना कैसे यह सिखलाया
मेरे मूलाचार तुम्हीं हो
समयसार भी तुझ में पाया

कश्ती है मँझधार हमारी
देकर हाथ सहारा तारो

मेरे मन मन्दिर में गुरुवर
तेरी मूरत तेरी सूरत
सच कहता है नाथ! हमें अब
नहीं किसी की और जरूरत

मैं निर्बाध चलूँ संयम पथ
मेरे सहजभाव स्वीकारो

20.10.2005
(सिंगोली)

तू ही सच्चा खेवन हारा

गुरुवर यह दिल ने स्वीकारा
तू ही सच्चा खेवनहारा

संयम और समर्पण धन दे
अंजुलि भेंट चढ़ाता जाऊँ
सहज स्वावलंबन से अपनी
नौका अग्र बढ़ाता जाऊँ

है विश्वास मिलेगा मुझको
भवसागर का शीघ्र किनारा

अब तक कितने मीत बनाये
राग-रंग के गीत सजाये
कितनी तोड़ी तन की वीणा
जो चेतन को जीत न पाये

तन के श्रृंगारों ने मन को
भटकाया, यह नहीं विचारा

दर्पण सा दिल अपना तोड़ा
टुकड़ों-टुकड़ों को फिर जोड़ा
आयु घट कर दिये हैं खाली
मोहकर्म ने खूब निचोड़ा

लौकिक विजय अनेकों पाईं
किंतु जीतकर के भी हारा

20.10.2005
(सिंगोली)

कोरा कागज मेरा जीवन

कोरा कागज मेरा जीवन
लिखो नाथ! इसपे आजीवन

कर्मों ने प्रभु! खूब लिखा है
पर्यायों में प्रगट दिखा है
माता-पिता, भाई और बहिना
कोई बंधु कोई सखा है

कर्म लेख मिट जाये मेरा
अक्षर-अक्षर हो संजीवन

श्रद्धा की लेकर के स्याही
ज्ञान कलम जिसकी हमराही
राग-द्वेष जिससे मिट जाये
हो ऐसा चारित्र-इलाही

कोरा पृष्ठ किंतु है काला
करो सफेद दे दो नव जीवन

जीवन बन जाये जिनवाणी
चर्या हो निज – पर कल्याणी
नाथ! देख, सुन, पढ़कर मुझको
दुःखी न होवें जग में प्राणी

प्राणों को महकाओ ऐसे
महक रहा जैसे नंदनवन

20.10.2005
(सिंगोली)

मेघा बनकर आओ स्वामी

मेघा बनकर आओ स्वामी
धरती को नहलाओ स्वामी

इन्द्रिय, मन पर रहा न संयम
फैल रहा घनघोर असंयम
सबके मन कलुषित मैले हैं
अशुभभाव का होता संगम

सबकी हृदय भूमि पर बरसो
मृदुता से भर जाओ स्वामी

धरती ने श्रृंगार किया था
पहनी थी साड़ी हरियाली
नाथ! हुई यह बात पुरानी
साड़ी हुई अब जाली-जाली

वीतरागता की अब साड़ी
हाथों से पहनाओ स्वामी

मूलगुणों के फूल खिलाओ
शुद्धातम बगिया महकाओ
दुःखी जगत में रहे न कोई
जनम, मरण का रोग मिटाओ

धुल जाये सब कर्म कालिमा
एक बार नहलाओ स्वामी

21.10.2005
(सिंगोली)

स्वीकारो हे नाथ! प्रणाम

स्वीकारो हे नाथ! प्रणाम
जीवन हो मेरा निष्काम

इच्छाओं की गहन आग में
कभी द्वेष में कभी राग में
जलता आया नाथ निरन्तर
बाती जलती ज्यों चिराग में

परम सौम्य शीतल स्वभाव की
बनी रहे इच्छा अविराम

अब न चाहूँ खेल खिलौने
अब न चाहूँ रूप सलौने
न कंचन न चाहूँ कामिनी
गद्दा-तकिया और बिछौने

चाहूँ ज्ञानानंद आत्मा
होगा तब ही कर्म विराम

वासना के वसन सारे
और आभूषण उतारे
साधना के वास्ते अब
मौन होकर आये द्वारे

भावनाओं को हमारी
नई चेतना दो गुणधाम

21.10.2005
(सिंगोली)

साँचा है गुरु प्यार तुम्हारा

साँचा है दरबार तुम्हारा
साँचा है गुरु प्यार तुम्हारा

दुनिया में हर इक रिश्ते पे
लगी स्वार्थ की पहरेदारी
यहाँ मोल न सच्चाई का
दिखती है काला-बाजारी

मिट्टी पर सब इठलाते हैं
चेतन का लेकर उजियारा

ठगी-ठगी सी देख रही है
नाथ! वस्तुओं की महँगाई
सोच रही है मुझसे ज्यादा
राग रंग ने कीमत पाई

झूम रहे सब मोह मद्य पी
है यह कैसा अजब नजारा

नारी की जुल्फों में पानी
इतनी ही सबकी जिंदगानी
छिटक-छिटक वह बतलाती है
खत्म हो रही तेरी कहानी

किंतु समझ कब आई किसको
घूमे सबका मन आवारा

जानी है जग की सच्चाई
अच्छाई का अंत बुराई
मोह कर्म की अय्यासी ने
पानी में भी आग लगाई

रिश्तों की ऊँची लहरों में
कोई दिखता नहीं किनारा

समझ लिया है मोल सभी का
हल्का-भारी तौल सभी का
किंतु समझ न पाया अब तक
जीवन है अनमोल सभी का

जाना जिसने मोल स्वयं का
मिलता न फिर जनम दुबारा

आया हूँ अब नाथ! शरण में
जीवन बीते नाथ! चरण में
नहीं हृदय में कोई कामना
चाहूँ अपना समाधिमरण मैं

आप मिले तो मुझे मिला है
भवसागर का तारणहारा

21.10.2005
(सिंगोली)

जीवन पुष्प हमारा खाली

जीवन पुष्प हमारा खाली
भरो रंग इसमें ओ माली

सम्यदर्शन ज्ञान चरित के
रंग बिरंगे रंग तुम लाओ
मेरी शुद्ध आत्मा को फिर
सिद्ध प्रभु सा नाथ खिलाओ

शुद्ध ध्यान की पवन बहे नित
झूमे चेतन डाली-डाली

अब तक जीवन पुष्प खिलाया
रंगहीन होकर मुरझाया
ढूँढे नाथ! अनेकों माली
किंतु आप सा गुरू न पाया

अगर भरे भी रंग किसी ने
नाथ! रहे वे सब रंग जाली

मैं निगोद से चलकर आया
बड़े पुण्य से तुमको पाया
सुना है हमने इन्हीं रंगों से
तुमने जीवन पुष्प खिलाया

दर्श तभी हो सकता निज का
मिटे अमावस रात ये काली

21.10.2005
(सिंगोली)

नाथ! आप सम पाऊँ सरलता

सरिता जैसी पाऊँ तरलता
नाथ! आप सम पाऊँ सरलता

जिसने तुमको मन से ध्याया
गुरुवर तेरा ध्यान लगाया
उसने खुद अपनी किस्मत को
हीरे जैसा ही चमकाया

नाथ! विकारी भाव हटाकर
पाऊँ तुम जैसी निर्मलता

नाथ! आप जब ध्यान लगाते
अपने को अपने में पाते
चिदानंद चैतन्य प्रभु के
सहज आवरण हटते जाते

हे स्वामिन्! मैं भी प्रगटाऊँ
तुमने जो प्रगटाई विमलता

मन भी कंचन, तन भी कंचन
नाथ! आपकी चेतन कंचन
जब विकल्प में आप ठहरते
शुभभावों का होता मंचन

अमलस्वभावी अशरीरी सी
शुद्धभाव से पाऊँ अमलता

21.10.2005
(सिंगोली)

कीर्ति स्तम्भ बने श्रमणों में

हे विराग गुरू आप गुणों में
कीर्तिस्तम्भ बने श्रमणों में

चर्या है आगम अनुसारी
हे गुरूवर तुम आत्म – बिहारी
श्रमण संघ के हो तुम नायक
महक रही संयम फुलवारी

मिटा दिया कर्त्तव बुद्धि से
निभा रहे कर्त्तव्य क्षणों में

वात्सल्य निर्झर सा झरता
भविजन को आनंदित करता
छलक रही करूणा की गागर
अन्तर – मन की कालुष हरता

उपसर्गों में संघर्षों में
आप सूर्य सम हो किरणों में

नाथ! समितियों को तुम भाते
हैं तेरे गुटित से नाते
पाल रहे हो पाँच महाव्रत
पंचाचार प्रवीण कहाते

हो आचार्य आचरण के तुम
महावीर पथ अनुशरणों में

21.10.2005
(सिंगोली)

नहीं राग से तेरे नाते

नहीं राग से तेरे नाते
इसीलिए गुरू विराग कहाते

मुक्ति वधु देखी है क्वँारी
अमल रूप के आप पुजारी
मुक्तिवधु बिन चैन न तुमको
कर ली वरने की तैयारी

रत्नत्रय घोड़े पे चढ़कर
निष्प्रमाद तुम बढ़ते जाते

छत्तीस मूलगुण बने बाराती
संघ श्रमण है तेरे संगाती
मुक्तिवधु भी तड़प रही है
चर्चा करते नहीं अघाती

दशधर्मों का साफा बाँधे
द्वादश तप का तिलक लगाते

परीषह वन्दनवार सजाते
यशः कीर्ति के बैण्ड बजाते
वाह-वाह रे दूल्हा राजा
मुक्तिवधु को खूब रिझाते

निर्ग्रंथों की फैशनवाला
सूट विमल गुरू से सिलवाते

22.10.2005
(सिंगोली)

गुरुवर तुम दर्पण को दर्पण

गुरूवर तुम दर्पण को दर्पण
मेरा जीवन तुमको अर्पण

माँज-माँज कर अपने मन को
स्वच्छ किया अपने जीवन को
तुम अन्तर के वस्त्र उतारो
सिखा रहे हो हम भविजन को

कर्णाञ्जलि से उपदशों को
पी सकता जो करे समर्पण

ध्यान लगाते चेतनगिरि पर
दृष्टि लगाई 'अन्तर श्री' पर
महा मौन की गहन साधना
छाप छोड़ती नाथ! सुधी पर

वीतराग संग मधुर मिलन में
बीत रहा है तेरा क्षण-क्षण

नाथ! आप जब दृढ़ता लाये
कर्म वेदना से अकुलाये
पथ महागुरू शरण तुम्हारी
किन्तु कर्म को कौन बचाये

कल चेतन पे हँसने वाले
कर्मों पे अब हँसता कण-कण

22.10.2005
(सिंगोली)

गुरुवर मेरा मन दीवाना

गुरूवर मेरा मन दीवाना
तुमको पाकर हुआ सयाना

नहीं चाहता हीरा-मोती
नहीं चाहता चुपड़ी रोटी
चाह रहा है हर क्षण हर पल
प्रगटे निजघट चिन्मय ज्योति

नश्वरता सौगात हो जिसकी
भौतिक सुख पर क्या इतराना

मीत बनाये संग-संग खेले
फिर भी स्वामिन्! रहे अकेले
सुख का पथ होता एकाकी
बतलाते गुरू तुम अलबेले

रिश्ता बना-बनाकर हारा
सच्चा रिश्ता ना पहिचाना

आई-गई बहारें कितनी
बरसी नई फुहारें कितनी
किंतु न मौसम हुआ सुहाना
मचली सर्द हवायें कितनी

जब तक मन को पूर्ण शान्ति ना
लगता हर मौसम बेगाना

22.10.2005
(सिंगोली)

भोली सूरत लगती प्यारी

देख रहा तस्वीर तुम्हारी
भोली सूरत लगती प्यारी

तुम्हें कभी श्रृंगार न भाया
सजनि का भी प्यार न भाया
बालापन से चंचल मन पर
अपना हर अधिकार जमाया

बाल ब्रह्मचारी हे गुरूवर!
छवि तेरी लगती है न्यारी

यौवन से तुमने मुख मोड़ा
इन्द्रिय सुख से रिश्ता तोड़ा
फिर भी अपना मन बहलाने
निज स्वभाव से नाता जोड़ा

ज्ञान ध्यान तप लीन सदा तुम
रहते हो गुरूवर अविकारी

जग में रहते जग से न्यारे
सारे वैभव तुमसे हारे
पाऊँ मैं तुम सी निष्पृहता
नाथ! आये हम तेरे द्वारे

हे निर्वाण चाहने वाले
तेरी वाणी है हितकारी

22.10.2005
(सिंगोली)

गूँजेगा विराग जयकारा

नभ में है जब तक ध्रुव तारा
गूँजेगा विराग जयकारा

श्रमण संघ से वंदनीय हो
जनमन से अभिनंदनीय हो
ओ जिनवाणी के सपूत तुम
अर्चनीय हो पूज्यनीय हो

गायेगा इतिहास स्वयं ही
युगों-युगों तक सुयश तुम्हारा

उपसर्गों से न घबराये
परीषह फिर क्यों तुम्हें डराये
समता की शक्ति के आगे
नाथ! विषमता छू न पाये

जीत लिया है जिसने खुद को
उस पारस से कमठ भी हारा

करूणा दया प्रेम के आलय
चारित जैसे अचल हिमालय
श्रमण संघ के हे अधिनायक!
टेर दे रहा तुम्हें शिवालय

तेरे हितकर उपदेशों से
है अभिभूत विश्व ये सारा

22.10.2005
(सिंगोली)

निर्जरा का सार हो तुम

निर्जरा का सार हो तुम
मुक्ति का आधार हो तुम

ज्ञेय हो तुम, ज्ञान हो तुम
हेय का भी उपादान हो तुम
उपादेय में भी तुम ही हो
इन सबसे रहित महान हो तुम

विभाव परिणति के लिये भी
दहकते अंगार हो तुम

प्रेय हो तुम, श्रेय हो तुम
प्रवचन प्रमेय हो तुम
गुण-गुणी में लीन हो तुम
सहज ही अनुपमेय हो तुम

पूर्णता की प्रीति में भी
स्वानुभव की बहार हो तुम

जेय, अपराजेय हो तुम
आदेय हो, अनादेय हो तुम
आनंद हो इन्द्रिय, अतिन्द्रिय
शुद्ध सहज श्रद्धेय हो तुम

सहज सुख की लीनता में
मुक्ति सजनि का प्यार हो तुम

22.10.2005
(सिंगोली)

मैं बहुत खुश हूँ हे गुरुवर!

तुझ चरण की धूल बनकर
मैं बहुत खुश हूँ हे गुरुवर!

प्रेय की तुम कामना हो
नाथ! तुम हर चाहना हो
डूब तुझमें जी रहा हूँ
श्रेय की तुम साधना हो

विराग बगिया में खिला हूँ
हँस रहा हूँ फूल बनकर

राग की छोड़ी चुनरिया
विराग की ओढ़ी चुनरिया
वीतरागी बन गुजारूँ
नाथ! मैं अपनी उमरिया

शुद्धात्मा की ध्या सकूँ
निज ध्यान की मैं चूल बनकर

आप बिन मैं था अधूरा
हो सका अब नाथ! पूरा
मुक्ति वधु की दूरियाँ भी
मिटेंगी विश्वास पूरा

रोकूँ में निज ध्यान नौका
सिद्ध प्रभु सा कूल बनकर

23.10.2005
(सिंगोली)

संस्थापक ग्रंथमाला

श्री कस्तूरचन्द जी बाबरिया
(दौतड़ावाले)

श्रीमती धापूबाई बाबरिया
(दौतड़ावाले)

शिरोमणि संरक्षक

श्री विनोद कुमार जी मित्तल
श्रीमती कल्पना जी मित्तल
C/o लाईम स्टोन ट्रैडर्स
बाजार नं. २, रामगंज मण्डी

डॉ. सुगन चंद जी जैन
श्रीमती ऊषा जैन
अशोक नगर (म.प्र.)

श्री पदमचन्द पाटनी
श्रीमती कमलादेवी पाटनी
१-घ-३४, दादाबाड़ी,
कोटा-३२४००९ (राज.)

श्री लक्ष्मीलाल जी जैन
श्रीमती भगवती जैन
डूंगरपुर (राज.)

श्री भगवती लाल जैन
श्रीमती शोभा जैन
डूंगरपुर (राज.)

श्री पुरुषोत्तम जैन
श्रीमती मीरा जैन
शिवपुरी (म.प्र.)

आचार्य विरागसागर ग्रंथमाला के महत्वपूर्ण प्रकाशन

- **विरागांजलि** (श्रमण एवं श्रावक के लिये आवश्यक भक्ति पाठ संग्रह का सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन)
- **आइना (काव्य संग्रह)** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी द्वारा रचित कविताओं का महत्वपूर्ण संकलन)
- **ज़ाहिद की ग़ज़लें** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा रचित ग़ज़लों का संग्रह एवं आकर्षक सुन्दर प्रकाशन)
- **जीवन है पानी की बूँद (समग्र)** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा रचित बहुचर्चित भजन के 1000 छन्दों का संग्रह एवं आकर्षक सुन्दर प्रकाशन)
- **चटपटे प्रश्न- स्वादिष्ट उत्तर** (प्रश्नोत्तर रत्नमालिका एवं अपरा प्रश्नोत्तर रत्नमालिका पर आचार्यश्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा लिखित पहेलियाँ)
- **हिन्दी साहित्य की सन्त परम्परा में आचार्य विरागसागर के कृतित्व का अनुशीलन** (डॉ. लोकेश खरे द्वारा आचार्य श्री विरागसागरजी महाराज के व्यक्तित्व कृतित्व पर पी.एच.डी.)
- **गूँगी चीख** (गर्भपात विषय पर दिया गया आचार्यश्री विमर्शसागरजी महाराज का ऐतिहासिक प्रवचन)
- **शंका की एक रात** (निःशंकित अंग का हृदय को छू लेनेवाला विवेचन एवं सुन्दर आकर्षक प्रकाशन)
- **मानतुंग के मोती** (श्री भक्तामर स्तोत्र पर आधारित प्रश्नोत्तर सहित एवं आचार्यश्री के तीन पद्यानुवाद से सजी-सँवरी विधान एवं शिक्षण शिविरों के लिये उपयोगी कृति)
- **विर्मशांजलि** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी द्वारा रचित पूजा, स्तोत्र पद्यानुवाद एवं पूजाओं का सर्वोपयोगी संकलन)
- **सोचता हूँ कभी - कभी** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा रचित सुन्दर आकर्षक काव्य संग्रह)

- **समर्पण के स्वर** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी द्वारा रचित गुरु चरणों में समर्पित हृदय स्पर्शी काव्य संग्रह)

- **खूबसूरत लाइनें** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी द्वारा रचित विभिन्न विषयों पर आधारित हृदय को छूनेवाला काव्य संग्रह)

- **जीवन चलती हुई घड़ी** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी द्वारा रचित जीवन है पानी की बूँद तर्ज पर 100 छन्दों का दिल को छू लेनेवाला काव्य संग्रह)

- **हे वन्दनीय गुरुवर** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी द्वारा रचित भजनों का संग्रह, परमगुरु आचार्यश्री विरागसागरजी मुनिराज के पावन कर कमलों में सादर समर्पित)

- **गीतांजली** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा लिखित भजनों का महत्वपूर्ण संकलन एवं सुन्दर आकर्षक प्रकाशन)

- **जनवरी विमर्श** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा गहन चिन्तन से उद्भूत, दिल और दिमाग को झकझोरने वाला सुंदर सूक्ति संग्रह)

- **शब्द-शब्द अमृत** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी के हृदय स्पर्शी एवं चिंतन को नई ऊर्जा देनेवाले महत्वपूर्ण प्रवचनांशों का सुंदर एवं आकर्षक प्रकाशन)

- **जैन श्रावक और दीपावली पर्व** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा रचित, जैन श्रावकों को दीपावली क्यों और कैसे मनाना चाहिये ? आदि अनेक प्रश्नों का मांगलिक समाधान एवं दीपावली पर्व का सुंदर विवेचन)

- **आओ सीखें जिन स्तोत्र** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी द्वारा पद्यानुवादकृत महत्वपूर्ण जिनस्तोत्रों का संग्रह, पठन-पाठन हेतु उपयोगी कृति)

- **भरत जी घर में वैरागी** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी द्वारा जैन श्रावकों की जीवनशैली पर दिया गया एक प्रेरणास्पद प्रवचन संग्रह)

- **मेरा प्रेम स्वीकार करो** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा रचित प्रभु भक्ति में समर्पित सर्वोपयोगी काव्य संग्रह का सुन्दर आकर्षक प्रकाशन)

- **करलो गुरु गुणगान** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा रचित गुरुभक्ति में समर्पित सर्वोपयोगी काव्य संग्रह का सुन्दर, आकर्षक प्रकाशन

- **वाह क्या खूब कही** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा रचित सर्वोपयोगी सुन्दर आकर्षक काव्य संग्रह का प्रकाशन)

- **प्रज्ञाशील महामनीषी** (आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज का रोचक लघु जीवन चित्रण)

- **जतारा का ध्रुवतारा** (आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज का रोचक लघु जीवन चित्रण)

प्राप्ति स्थान

1. **श्री विमर्श जागृति मंच**
   C/o श्री सुखानन्द साड़ी सेन्टर,
   बतासा बाजार, भिण्ड (म.प्र.)
   मो. 9826244355, 9826217291

2. **श्री विमर्शसागर साहित्य सदन**
   सिंगोली (नीमच) म.प्र.
   मो. 9424066526

3. **श्री विमर्शसागर साहित्य सदन**
   C/o श्री ब्रजेश 'शास्त्री'
   श्री पार्श्वनाथ जैन मंदिर,
   महावीर नगर प्रथम, कोटा
   मो. : 9829818226